

# धन्यवाद



हमे यह निवेदन करने हुए परम हर्ष होता है, कि श्रीरानेग निवासी स्वर्गीय श्रेष्ठ श्रीधुत भैरोंदानजी डागा की धर्मपत्नी एव श्रीधुत मगनमलजी दीपचदजी शैठिया की सुपुत्री श्रीमती माण रुवाई ने स्व० साध्वीजी श्री सत्य श्रीजी महाराज की शिष्या श्रीमती तेजश्रीजी महाराज की विदुषी शिष्या श्रीमती भक्तिश्रीजी मुक्तिश्रीजी के मदुपदेश से इस पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहायता प्रदान की है। अतः आप धन्यवाद के पात्र हैं।

निवेदक

श्री जिन हरिसागर सूरी जैन ज्ञानभण्डार  
मंत्री इन्द्रचंद्र मेघराज पारंग  
जाटाघास ( लोहाघट मारवाड़ )

श्रीसुखसागर जैन ज्ञान विदु न०-४३

अर्द्धे नम

वर्षोत्प-छहमासीत्प-उपधानत्प वीमस्थानकृतप के  
चैत्यवदन-स्तवन-स्तुति संग्रह रूप  
त्पपो विधि दूस्तरा भाग

प्रकाशक

श्री जिन हरिसागरसूरि जैन ज्ञान भंडार

मु० लोहापट ( मारवाड )

मूल्य

मुद्रक—जैन प्रेस, कोटा ( राणपूताना )

# दो शब्द

—= ० =—

वर्षीतप छहमासीतप उपधानतप एउ बीम स्थानक तप के करने वाले भाविक भक्तों के सुभीत के लिये पूज्येश्वर जैनानार्य श्रीश्री१००८ श्रीमजिन हरिसागर सूरेश्वरजी महागज माहब ने उस २ तप के चैत्यपदन स्तवन स्तुति आदि सकलित करके बड़ा उपकार किया है ।

उस २ तप के करने वाले महानुभाव इससे लाभ उठावें एवं आध्यात्मिक प्रगति को करते हुए परमात्म पद का लाभ प्राप्त करें यही अभिलाषा करता हूँ ।

हितपी

मुनि हेमेन्द्र सागर

जैसलमेर ( राजपूताना )

\* ॐ अर्द्ध नम \*

॥ श्रीसुखसागर-भगवज्जिनहरि पूज्यपरमगुरुभ्यो नमो नमः ॥

— ० —

पूज्यपाद-पूज्येश्वर-प्रात स्मरणीय-सुगृहीत नाम-  
घेय सर्वतत्र अतत्र आशालग्रहाचारि-श्रीसुविहित  
खरतरगच्छाधिराज श्रीश्री १००८ श्रीम  
ज्जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचित

वर्षीतप-

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति संग्रहः ।

— = ] 0 [ = —

चैत्यवन्दन—१ ।

( दत्तविलम्बितम् )

१

विमल-बोध-विधान-विवायज्ञो,  
युगल-जात-तमोपहर. प्रभु ।  
मङ्गलभाषविमारिसुधाममान,  
हरिनतो जयताञ्जयताच्चिरम् ॥

२

अतल-मीमभरोदधितारक,  
 मचल-साधन-भानसुधारक ।  
 जटिल-मोह-महोदय-हारको,  
 हरिनतो जयताञ्जयताच्चिरम् ॥

३

विपुल-वार्षिक-दिव्यतपोविधौ,  
 तरलतारहितात्मविवेकवान् ।  
 अरुल एक युगादिजिनेश्वरो,  
 हरिनतो जयताञ्जयताच्चिरम् ॥

चैत्यवन्दन—२ ।

( नोटक छन्द )

१

निज पूर्ण किये सनकर्म महा  
 चलान विरोधि- परानयको ।  
 प्रभु आदि अचचल भानभरे,  
 तप धारिक हर्षित हो करते ॥

२

प्रभु का तप तेज अहो कितना,  
 निज को परको सुगदायक वा ।

कृत कर्मकटे सबमर्म मिटे,  
परमात्मता-गुण भी प्रकटे ॥

३

धन माग्य किये जिनने प्रभु के,  
शुभ दर्शन दर्शन-पावन हो ।  
सुखसागर वे भगवान चने,  
हरिपूज्य हुए जय हो जय हो ।

चैत्यवन्दन—३ ।

(हरिगीत छन्द)

१

श्रीसुखम दुःखमा नाम आग अन्तमे जो अवतरे,  
भारत अकर्मक भावको हर कर्मपथ जो धिर करे ।  
नर नारियों मे पुण्यतम कर्त्तव्य बोधविधायक,  
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमदृषभ जिननायकम् ॥

२

समार के सब भोग भारी-रोग जैसे जान कर,  
साम्राज्य को रजपुत्र जैसे तज धरें सयम-प्रवर ।  
जग जीवगण को आत्म-नीत्रन ज्योति पावनदायक  
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमदृषभजिननायकम् ॥

३

कृत दुष्कृतो को दूर कर्मे के लिये उपशान्तिमय,  
 जो घोरतर तप वर्षभर कर पागये अनुपम विजय ।  
 श्रीनामिनृप मरुदरीनन्दन स्तीर्तिगायन-लायक,  
 त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमद्वप-जिननायकम् ॥

चैत्यवन्दन—४ ।

(शादूलविष्वाहितम्)

१

श्रीमन्नामिकुलाम्बराम्बरमणिश्चिन्तामणिश्चिन्तिते,  
 ऽर्थे योगीन्द्र किरीटनायकमणि कर्त्तव्यमार्गाग्रणीः ।  
 सन्दोर्धैरुसुधामणिर्गुणगणी कल्याणभारप्रणी,  
 श कर्पाद् हरिपूज्य-पुण्यपदभागादौ युगग्रामणी ॥

२

मिक्षारिष्यनभिनभक्तजनतानीते महोपायने,  
 रन्या रत्न-हयेभ रस्तुविषये निय सुपेक्षापर ।  
 दीक्षानन्तरमन्तरायवशतश्चक्रेतपो वार्षिक  
 य मोऽय हरिपूज्य पुण्यपदवि. पाथादपायान्प्रभु ॥

३

जाति-स्मृत्युपलक्षिताय विधिवन्नव्येसुभूयोरस,  
 श्रेयासेन विहारितो भगवते भव्यात्मना भावत ।

देवैः पञ्च-सुदिव्यदिव्यमहिमाऽकारीति धन्ये क्षणे,  
धन्यास्ते हरिपूज्यपुण्य महिता येऽक्ष्णः फल लम्बिता ॥

### चैत्यवन्दन—५ ।

दृष्ट्वा—

ॐ अहं आदिप्रभु-युगआदिस्वितिकार ।  
कर्म अनादि दूर कर-बदू वार हजार ॥ १ ॥  
निज जीवन अदर्श से-जगजीवन उपकार ।  
कर्ता हे प्रभु आपको-बदू वार हजार ॥ २ ॥  
अतराय आश्रय सभी-सेवू मे हर वार ।  
जीवन मे पलटा करो-बदू वार हजार ॥ ३ ॥  
पूरव कृत निज कर्म को-भोगें आप उदार ।  
मेरी क्या औकात बस-बदू वार हजार ॥ ४ ॥  
वर्षीतप कर आपने-किया कर्म सहार ।  
वह बल मुझको दीजिये-बदू वार हजार ॥ ५ ॥  
सुखसागर भगवान हे-आदीश्वर अवतार ।  
शरणागत रक्षा करो-बदू वार हजार ॥ ६ ॥  
हरि पूज्येश्वर आप हैं-मेरे तो आधार ।  
मनसा वचसा कर्मणा-बदू वार हजार ॥ ७ ॥



## स्तवन—१ ।

( तज—तेरे पूजन को भगवान बना मनमदिर आलीशान ।

जय जय आदीश्वर भगवान

अगमगुणि तानी दया निदान ॥ १ ॥

प्रभुने युगलार्धर्म निरारा, करम युग पावन सूब प्रचारा ।  
बड़ा जग भव्य-कला रिज्ञान, हुआ फिर जीवन का कल्याण ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ १ ॥

त्रिनीता नगरी राज्यजम्पाया, भोगा पूरुष पुण्य कमाया ।  
छोडा अरे अधिर सब जान, समय साधा पुण्यप्रधान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ २ ॥

जगत की जनता भक्त नमाम, करती सन्निभ भाव प्रणाम ।  
न जाने भिक्षा विधि विधान, इसी में था सकेत महान् ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ३ ॥

पूरुष भव का था यह पाप, बैल मुख छींका बाधा आप ।  
उसी से जाना रिघन निदान, महा प्रभु क्षमाबली चलवान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ४ ॥

कन्या हम गय रथ पणिलारे, लोफ प्रभुको भेंट चढारे ।  
पर प्रभु धरें न उनपर ध्यान, विधियुत चाहें भिक्षादान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ५ ॥

वरस यों वीता विन आहार, जय जय जिनवर जगदाधार ।  
बने रहें अचल सुमेरु महान्, तमी तो पाये पूजा स्थान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ६ ॥

श्रीश्रेयास कुमर अचलोके, जाती समरण भाव अशोकै ।  
प्रभु के उचित सुभिक्षा दान, जाना, होगया हर्षित प्रान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ७ ॥

प्रभु के अतराय का योग, टूटा प्रकटा धन्य सुयोग ।  
इक्षु रस वर अमृत-पान, करावें श्रीश्रेयास महान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ८ ॥

प्रकटे पच दिव्य अभिराम, काटे प्रभुने कर्म तमाम ।  
धन्य वह समय धन्य अवधान, धन जो पाये दर्शन दान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ९ ॥

परव वह अरुा तीज शुभनाम, आराधक अक्षय गुणधाम ।  
होते सुखसागर भगवान, वर्षीतप करके अनिदान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ १० ॥

ममाधि विधियुत तपको वार, मज्जिन भवजल करते पार ।  
करें 'हरि' उनका नित गुणगान, जय जय आदीश्वर भगवान ॥

जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ११ ॥



## स्नघन—२ ।

(तज—गोपीजन्म लक्ष्मी यादल घरसे रे कचन महेल में)

आदीश्वर स्वामी नामी बल ऐमा हम को दीजिये  
तप सफल करे हम वैसा बल कृपया हमको दीजिये ॥ १ ॥

पूरब भय कृत अन्तराय को, वर्षीतप कर तोडा ।  
हम भी वैसे ही कर पावें, अटे न आडा रोडा रे ॥

आदीश्वर स्वामी० ॥ १ ॥

अतराय से मन की इच्छा, मनमे नाथ ममावे ।  
कृप की छाया कृप ममावे, कोई काम न आवे रे ॥

आदीश्वर स्वामी० ॥ २ ॥

हम अज्ञानी अतराय के, आश्रय सारे सेवें ।  
भवसागर मझधार नाथ हम, नाथ दयाकर खेवें रे ॥

आदीश्वर स्वामी० ॥ ३ ॥

हम हंस बाधे कर्म अनेकों, नहीं विवेक धरावें ।  
रोते रोते भोग रहे हम, किसको नाथ सुनावें रे ॥

आदीश्वर स्वामी० ॥ ४ ॥

सयम शक्ति रही न हममे, कोरी धात बनावें ।  
कागज की नैया पर बैठे, कैसे पार लगावें रे ॥

आदीश्वर स्वामी० ॥ ५ ॥

ऐव दूमरों के हम देखे, अपना करें न लेखा ।  
हुगर बलता देख रहे पर, पग बलता नहीं देखा रे ॥  
आदीश्वर स्वामी० ॥ ६ ॥

धन्य धन्य प्रभु धन्य आपने, अपना रूप निपाया ।  
परमात्म पद को प्रकटा कर, परमानन्द बढ़ाया रे ॥  
आदीश्वर स्वामी० ॥ ७ ॥

नाभि नृप मरुदेवा नदन, जय जय हे अत्रिफारी ।  
वर्षीतप कर कर्म खपाये, जावे हम बलिहारी रे ॥  
आदीश्वर स्वामी० ॥ ८ ॥

धन हथिणाउर पावन भूमि, धन श्रेयास कुमार ।  
धन इक्षुरस पान किया प्रभु, धन दिन पर्व उदारा रे ॥  
आदीश्वर स्वामी० ॥ ९ ॥

चैतवदी आठम से लेकर, सुद वैशाखी तीजे ।  
वर्षीधिक तप किया पारणा, शान्त सु गारस भीजे रे ।  
आदीश्वर स्वामी० ॥ १० ॥

सुखमागर भगवान तुम्ही हो, प्रभु हरिपूज्य हमारे ।  
जीवनमे बल बुद्धि भरदो, गावे जय जय कारे रे ॥  
आदीश्वर स्वामी० ॥ ११ ॥

## स्तवन—३ ।

( तर्ज—गुड सुदर अति मनोहर शोच्यदे मानर )

आदि जिनररजी अनादि, कर्मफल हर लीजियें ।  
 दाम हू अरदास मेरी, ध्यान में धर लीजियें ॥ १ ॥  
 तीमरा आरा प्रभु वह था, अर्धमरु भाव म ।  
 कर्मयुग तब था दिखाया, अब भी दिखा ला दीजियें । आ० ॥ १ ॥  
 आपने नर नारियों को, मोक्ष की दी थी कला ।  
 नाथ अब वैसी कला का, दान दया कीजियें । आ० ॥ २ ॥  
 शननीति धर्मनीति, के प्रवर्तन आप हैं ।  
 है अनीति ज रही घम दूर उसको कीजियें । आ० ॥ ३ ॥  
 राज को रजपुत्र माना, भोग माने रोग से ।  
 त्याग का वह पाठ पावन, नाथ सिखला दीजियें । आ० ॥ ४ ॥  
 वर्षमर रहकर निराहारी, करम तोड़े प्रभु ।  
 वह मफल तप कर मरू, यह शक्ति प्रभु दीजियें । आ० ॥ ५ ॥  
 हाथि हय-कन्या रतन मणि क, प्रलोभन आपको ।  
 ये चलान सके अवलता, नाथ मुझको दीजिये । आ० ॥ ६ ॥  
 भक्त चर श्रेयास से लें, इशुरम पावन किया ।  
 वैसी भक्ति कर मरू, वसा समय प्रभु दीजियें । आ० ॥ ७ ॥  
 की तपस्या म क्षमा थी आपने अनुपम प्रभो ! ।  
 उस क्षमा की साधना को आज सिखला दीजियें । आ० ॥ ८ ॥  
 ज्ञान केरुल आपने पाया स्वमाता को दिया ।

शुद्ध उसके अशका कुठ दान दाता कीजिये । आ० ॥९॥  
 आप सुखसागर प्रभु भगवान है समार मे ।  
 नाथ निज पद भक्ति के अधिकार को कुठ दीजिये । आ० ॥१०॥  
 हे प्रभो हरिपूज्य गुण गाया करू नित आपका ।  
 बुद्धिबल वह दीजिये इस विनति को मुन लीजिये । आ० ॥११॥



### स्तवन—४ ।

( तर्ज—तुम को लाखों प्रणाम )

आदीश्वर अग्रतारी तुम को लाखों प्रणाम ।  
 रूपभ प्रभु जयकारी तुम को लाखों प्रणाम ॥ १ ॥  
 नामि नृप परुदेगी नदा, इक्ष्वाकु कुल कमल दिणदा ।  
 युगलाधर्म निगारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ २ ॥  
 कोशल देश विनीता पावन, जनता में डाला नव जीवन ।  
 आदि युग उपकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ३ ॥  
 चौसठ बहुतर कला मियाई, सुखमय जीवन रीति दिखाई ।  
 पुण्य कला बलिहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ४ ॥  
 तीस लाख पूरब तरु स्वामी, रहे कुमार पदे अभिरामी ।  
 धन जीवन अनिकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ५ ॥  
 तेसठ लाख पुरवतरु राजा, रहे जगत के प्रभु मिग्ताजा ।  
 राज नीति विस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ६ ॥

भरतादिरु सौ सुत बडरीरा, गुण मे मागर सम गभीरा ।  
 तद्भव शिव सचारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ६ ॥  
 ब्राह्मी सुदरी सुता सती थी, शील महाव्रत पुण्यवती थी ।  
 नाम लिया निस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ७ ॥  
 अनामक्त भोगी प्रभु योगी, सयमधारे नृप महयोगी ।  
 माधु चार हजारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ८ ॥  
 पूर्व जन्म कृत कर्म प्रभावे, ममुचित भिक्षा वस्तु अभावे ।  
 उर्षाधिक निराहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ९ ॥  
 किया निरंतर सुव्रत साधन, प्रभु अनंत बल धारी धन धन  
 परम क्षमा चित्तधारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १० ॥  
 श्रीश्रेयाम कुंजर पुण्योदय, अग्नातीज इक्षुरम सुखमय ।  
 व्रत पारण निर्द्वारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ११ ॥  
 एक लाख पूर्य सयम घर, उत्तरोत्तर गुणठाना चढकर ।  
 हुए मुक्ति अधिकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १२ ॥  
 स्वामी शरणागत हू तारो सफल तपोबल बुद्धि वितारी ।  
 हरिपूजित पद धारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १३ ॥

### स्तवन—५ ।

( तज—भीनासर स्वामी अतरजामी तारो पारमनाथ माङ्ग )  
 आर्द्राश्वर स्वामी त्रिभुवन नामी अभिरामी अवतार ।  
 पचम रातिगामी निरगुणधामी आरामी अविकार रे ॥ टेरे ॥

हे प्रभु कर्म से पीडित हूँ मैं, कर्म बड़े विकराल ।  
 आप अकर्मक भाग के नायक, मेरी करो प्रतिपाल रे आ० ॥१॥  
 घाती अघाती चार चार हैं, है उनका त्रिमतार ।  
 आत्म के गुण आठ उन्हीं पर ये करते अधिकार रे आ० ॥२॥  
 मिथ्यात्वादिक हेतु सहित जो किरिया होती राम ।  
 उससे आत्म पडता पुद्गल, रूपी कर्म के पाम रे आ० ॥३॥  
 शुभ किरिया है पुण्य का कारण, कचन वेडि समान ।  
 पाप अशुभ है लोह की पेडी दुस्सह दुःख निदान रे आ० ॥४॥  
 जीव अनादि कर्म अनादि, उभय अनादि सयोग ।  
 कनकोपल मे पाकर जैसे, स्वामी साधो वियोग रे आ० ॥५॥  
 प्रभु गुण जैसे मुझमे भी है, सत्तागत गुण आठ ।  
 व्यक्त करो कृपया प्रभु मेरे, जैसे हुतासन काठ रे आ० ॥६॥  
 विघन घनाघन कर्म बली को, वर्षात्रिक तप धार ।  
 आत्म ध्यान सुपावन परने, आप किया परिहार रे आ० ॥७॥  
 बज उदय उदीर्ण मत्ता-गत मम कर्म अनेक ।  
 उसपर विजय करूँ मैं कैसे ? यह दो नाथ त्रिवेक रे आ० ॥८॥  
 गुण ठानों की महिमा भारी, फरमाइ जगनाथ ।  
 उत्तरोत्तर मे भी चढ पाउ, जो पकडो मुझ हाथ रे आ० ॥९॥  
 कर्म प्रवर्तक हो कर स्वामी हुए अकर्मक आप ।  
 यह तप त्याग तपोबल-बुद्धि देदो हे मा आप रे आ० ॥१०॥  
 सुगसागर भगवान परमहरि-पूज्य दया कर देव ।  
 पाउ अकर्मक तुम पददर्शन तो नित मातु सेव रे आ० ॥११॥



## म्नघन—६ ।

( नज—गघधू सो जा गीगुरु मेरा—भाशाधरी )

बाबा क्रपम निनद तपधारे ।

कर्म कलर निरारे रे बाबा० ॥१॥

रान तना सुख माज तजा निज आत्म के उपयोगी ।  
 ग्राम नगर पुर विचरे स्वामी, सयम सुख के भोगी र बा० ॥१॥  
 भिक्षाविधि नहीं लोर पिछाने, प्रभु र्मोदय जानें ।  
 मौन सहित वर्षाधिक तप को, परम धमा सह छाने रे बा० ॥२॥  
 भक्ति सहित नरनारी प्रभु के अर्पण हित नित लावें ।  
 रुन्या हय गय रथ रतनों को, नाथ नजर नहीं ठार रे बा० ॥३॥  
 श्रीधेयाम कुँर पुण्योदय जाती—समरण भावे ।  
 जिन दर्शन भिक्षा विधि जाने इधुरम बहिरावे रे बा० ॥४॥  
 धन दाता बन पात्र प्रभुजी धन दिन तीज सुहावे ।  
 पच दिव्य प्रस्टे नित जय जय सुर गण पतिहरिगारे बा० ॥५॥



## म्नघन७— ।

( नज—तेरा तो हो चुका हूँ चाहे तारों या न तारों—कचाली )

आदीश टेन प्यारे पिनती रूक विचारो ।

नित टाम जान करक मेरी दया सुधागे ॥१॥

स्वामी रुहे विना ही, मव आप जानते हैं ।  
 जानी प्रभो दयालु, अज्ञान को निवारो आ० ॥१॥  
 फैला प्रभाव मारी, कर्मों का नाथ मुझ पर ।  
 गुमराह हो रहा हूँ अयदेव ! बम उचारो आ० ॥२॥  
 तप वर्ष मर किया था, हा आप तो बली हैं ।  
 बल हीन दीन मुझ में, बल बुद्धि को प्रचारो आ० ॥३॥  
 पर पौत्र आप का था श्रेयाम नाग्यशाली ।  
 अति भक्ति कर सका था मैं क्या करूँ उचारो आ० ॥४॥  
 सुखसिन्धु नाथ भगवन् हरिपूज्य नाथ मेरी ।  
 मन्त्रधार में पडी है, करके दया उधारो आ० ॥ ५ ॥



स्तवन—८ ।

( तर्ज—मं नो दिवाना प्रभु तेरे लिये )

प्रभु हाजिर खडे हम तेरे लिये ।  
 तेरे लिये हा तेरे लिये प्र० ॥ टेर ॥  
 नामि नृप मस्देवी के नदन ।  
 वदन करे हम तेर लिये प्र० ॥ १ ॥  
 हाथी को लायें घोड़ों को लायें ।  
 रथ को मगायें प्रभु तेरे लिये प्र० ॥२॥

कन्या को लायें व्याह रचायें ।

महल तैयार करें तर लिये प्र० ॥३॥

रत्नों को लायें मणियों को लायें ।

रुचन का टर करें तेरे लिये प्र० ॥४॥

शाल दुशाले वस्त्र अनोखे ।

अर्पण करें हम तेरे लिये प्र० ॥५॥

यह दुरा हम से दखा न जाये ।

दुखिये हँ हम प्रभु तर लिये प्र० ॥६॥

ससार जोडा समय को धारा ।

मौनी हुए प्रभु किमके लिये प्र० ॥७॥

वर्षीतप को धारें प्रभु जी ।

कर्म कलरु हरने के लिये प्र० ॥८॥

श्रेयाम आया इशुरस लाया ।

वह तो उचित था तर लिये प्र० ॥९॥

भक्ता ने जाना तब से प्रभुनी ।

आहार दना तेरे लिये प्र० ॥ १० ॥

पच दिव्य तब प्रकटे घ भारी ।

'हरि' करें जय तेरे लिये प्र० ॥११॥

स्तवन—९ ।

( तर्ज—मेरे मौला मदीने बुलालो मुझे )

आदिनाथ अनादि कलक हरो ।

भागे सदि अनत के भाव भरो ॥ टेर ॥

ज्ञान गुण उज्ज्वल अरुपी आप रूपे आतमा ।

कर्म से रूपी कलकी हो रहा है खातमा ।

स्वामी कर्मों का जल्दी से आप करो । आ० ॥ १ ॥

अतराय अनत ने घेरा मुझे है सर्वथा ।

जानते हैं आप, अपनी क्या कह दुख की कथा ।

अंतराय का अतः विशेष करो । आ० ॥ २ ॥

वर्षभर स्वामी निरतर आपने धत थे किये ।

कैसे करूँ निर्बल मुझे बल नाथ कुछ कुछ दीजिये ।

मेरी दीन दशा पर गौर करो । आ० ॥ ३ ॥

आप के तप तेज ने सब लोक आलोकित किये ।

उस तेज में इस दास को भी आप अपना लीजिये ।

घन घोर अंधेरे को दूर करो । आ० ॥ ४ ॥

सुख सिन्धु विभु भगवान हे हरिपूज्य दर्शन दीजिये ।

निज दयामय दृष्टि से पियूष दृष्टि कीजिये ।

बीच अन्तर को प्रभु दूर करो आ० ॥ ५ ॥

## स्तवन- १०-१

(तर्ज—रखिया बघायो रे भैया साग्रत आयो रे)

- हम घर आवो हें स्वामी विनती को मानो रे ॥ टेर ॥  
 कन्या हय हाथी लेवो, भूरी घन घाम लेवो ।  
 भाव पिछानो रे । हम० ॥ १ ॥
- मणि रत्नों को लेलो, मोती के हार लेलो ।  
 दो प्रभु ध्यानो रे । हम० ॥ २ ॥
- कचन के थाल लेलो—शाल दुशाला लेलो ।  
 विनय पिधानो रे । हम० ॥ ३ ॥
- मौन को खोल बतावो, चाहो सो नाम सुनाओ ।  
 मौन न ठानो र । हम० ॥ ४ ॥
- ऐसे तो है दुख होता, हिरदा है स्वामी रोता ।  
 करो निदानो रे । हम० ॥ ५ ॥
- प्रभुजी वर्षीतप धारें, विघन कर्मों का टारें ।  
 अनुपम ध्यानो रे । हम० ॥ ६ ॥
- पूरब भव श्रेयास देखा, पाया तब पूरा लेखा ।  
 दे गम दानो रे । हम० ॥ ७ ॥
- सुखसागर भगवाना, हे हरिपूज्य प्रधाना ।  
 दो प्रभु ज्ञानो र । हम० ॥ ८ ॥

स्तुति—१

आदीश्वर स्वामी अतरजामी आप,  
 वर्षी तप ठाया पूरे पुण्य प्रताप ।  
 पूरव कृत दुष्कृत अंतराय कर दूर,  
 प्रकटाया पावन परमात्मपद नूर ॥ १ ॥  
 कर्मों को तोड़े विना न होवे सिद्धि,  
 कर्मों के हटते होती सिद्धि समृद्धि ।  
 जगमे जो पाते होते हैं वे सिद्ध,  
 उन की नित वदू निज गुण-मान विशुद्ध ॥ २ ॥  
 हैं कर्म समी जड़ आत्म के आधार,  
 दिखलाते अपना अद्भुत बल विस्तार ।  
 कर्मों की सारी रचना श्री जिनदेव,  
 आगम में भापें करू सदा में सेव ॥ ३ ॥  
 चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी माय,  
 गरुडामन धारी करती भक्त सहाय ।  
 हरिपूज्य प्रभु की शासन देवी आप,  
 मा हरो हमारे पाप ताप मन्ताप ॥ ४ ॥

## स्तुति—२ ।

सुखमा दुःखमा के अंत समय मगवान,  
 युग आदि कर्त्ता हर्त्ता जग अज्ञान ।  
 शिव मारग बोधे निज जीवनदृष्टान्त,  
 वर्षातप धारें जय जय परम प्रशान्त ॥१॥  
 इन्द्रोघन तप क्षमा सहित हितकार,  
 चित धारें वारें आठों कर्म विकार ।  
 आतम उज्ज्वलें परमात्म पद धार,  
 ऋषमादिक जिनवर वन्दू धारवार ॥ २ ॥  
 निश्चय शिवगामी तप पद उद्यमवान्,  
 होता उद्यम से सफल ममस्त विधान ।  
 कालादिक जानो महयोगी समयाय,  
 जिन आगम बोलें सेवो सदा अमाय ॥ ३ ॥  
 हरिपूज्य सुपावन जिन शासन के भाग,  
 मदि जो आराधे उनके अमित प्रभाव ।  
 सब देवी-देवा विघन हरें ततकाल,  
 सुख सपति पूरे भजो तजो जजाल ॥ ४ ॥

स्तुति—३ ।

वद चैत की आठम सँयम धारें नाथ,  
 साधु हो जावें चार सहस नर साथ ।  
 पूरव भव भावी विघन घनाघन जोर,  
 वर्षीतप-घ्यानें हरे नमू करे जोर ॥ १ ॥  
 मिक्षाविधि जानें नहीं लोफ़ सविशेष,  
 देवें कन्या हय हायी मणि मय वेश ।  
 वर्षीधिक्रत्रतधर - वीतराग अवतार,  
 मौनी महात्यागी प्रभु की यज जयकार ॥२॥  
 जाती समरण से श्रीश्रेयाम कुमार,  
 प्रभु रूप पिछाने मिक्षा विधि विचार ।  
 इक्षु रस अमृत वहिरावे शुभ भाय,  
 जिन आगम बोधे जय जय पुण्य प्रभाव ॥३॥  
 हरिपूज्य प्रभुका तप पारणदिन सार,  
 पावन तम जगमें अखातीज जयकार ।  
 सोनैया सुमनस सुगंध जल वरसाद,  
 सुर असुर करे जग जय जय पुण्य प्रसाद ॥४॥



## स्तुति—४ ।

प्रभु आदि राजा आदि साधु सार, - १  
 आदि जिन आदि तीर्थंकर अवतार ।  
 नामि षरुदेवा नदन जग भरतार, १  
 वर्षीतप धारी ऋषभ द्रव जयकार ॥ १ ॥  
 तीर्थंकर हो या हो साधारण लोग,  
 कृत करमों का तो करना होगा भोग ।  
 याती व अघाती कर्म हैं आठ प्रकार,  
 जीते सो जिनार जगमें लप लपकार ॥२॥  
 सिद्धान्त सुनावें आदीश्वर अरिहत,  
 पूरव भव वृषमुख जीकी बांधें हत ! ।  
 उस विषय निपाके रहे वर्षंकर आप,  
 आहार विना व्रतधारीप्रभु मौंषाप ॥ ३ ॥  
 तप जप खप करके यथाशक्ति विकार,  
 हरिपूज्य प्रभु से जोडो अपना तार ।  
 तोडो कर्मों को रहे न कदुतर क्लेश,  
 सुखकारि सहायक हों सुर असुर हमेश ॥४॥

स्तुति—५ ।

अवसर्पिणी तीजा आरा अत अनत,  
 गुणधारी प्रकटे आदीश्वर जयवत ।  
 साधु हो साधें वर्षाधिक तप धीर,  
 कर्मों को वारें वन्दू जुग कर जोर ॥ १ ॥  
 सम्यग्दर्शन वर ज्ञान चरण चित धार,  
 साधक जन साधें आतम गुण अविकार ।  
 रूपी भावों को तज भज, आप सरूप,  
 आतम परमातम वदू त्रिभुवन भूप ॥ २ ॥  
 वर्षीतप आदि हैं तप विविध प्रकार,  
 उपशम धर भावे आराधक अधिकार ।  
 जिन आगम गावे गुरुगम साधन सार ।  
 सिद्धिगति पावें, शाश्वत सुख भडार ॥ ३ ॥  
 सुखसागर स्वामी ऋपमदेव भगवान,  
 जिनहरिपूज्येश्वर शासन विनय विधान ।  
 आराधें सुविहित तप विधि जो नर नार,  
 चक्रेश्वरी गौमुख उनको दे सुख सार ॥ ४ ॥

छमासी-तप-

# चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति

चैत्यवन्दन-१ ।

(शिरारिणी)

(१)

स्वयं सद्युद्धात्मा परमपरमात्मा जिनपति-  
जगन्नेता जेताऽतुल्यलवतो भोहनृपतेः ।  
तपो वीर्यैर्यै रूपगतगुणोऽगाध महिमा,  
महावीरस्वामी जयतु भगवत्ताप्तगरिमा ॥

(२)

महामीमोत्पातान् विदधति परसङ्गमसुरे,  
प्रमोर्यत्सदृष्टिः परमकरुणाद्रा समभवेत् ।  
तपश्चक्रे शान्तो जगति गुरुपाण्मासिकमहो,  
महावीरस्वामी जयतु भगवान् पावनमहा ॥

(३)

सुखाम्भोधि श्रीमाननुपममहादर्शचरितो,  
महायोगी त्यागी भवनतमसामुज्ज्वल  
स्फुरद्भक्तिप्रह्वप्रणतहरिपूज्यो जिनवरो,  
महावीरस्वामी जयतु विजयी कर्मविषये ।

चैत्यवन्दन-२ ।

(हरिगीत)

(१)

ससार सुखकर सर्वदुख हर अतुल बलशाली प्रभु,  
 निश्चय उसी भव मोक्षगामी सयमी होते विशु ।  
 उपसर्ग से निश्चल रहे निज साधना में जो सदा,  
 वन्दू उन्ही श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

(२)

सगम अधम सुर ने उपद्रव दृष्टता से जप किये,  
 पद्मास तक भगवानने व्रत तप निरन्तर थे किये  
 शान्ति क्षमा गुण धीरता वरवीरता रक्खी सदा,  
 वन्दू उन्ही श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

(३)

प्रभु वीतदूषण ज्ञान भूषण पुण्य गुण भडार हैं,  
 सुख सिन्धु हैं जग बन्धु हैं भगवान हैं आधार हैं ।  
 हरिपूज्य हैं मां चाप हैं हतपाप हैं जो सर्वदा,  
 वन्दू उन्ही श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

## चैत्यवन्दन-३ ।

हृत्किलम्बित

(१)

परम पानन जीवन विश्वमे,  
 अनुपमानगुणी भगवान की ।  
 सुरपति प्रणतातम भाव से,  
 स्तुति करे भव सागर तारिणी ॥

(२)

अधम सगम देव अभव्य था,  
 सुन परीक्षण के हित आगया ।  
 मलिन भाव भरा करता रहा,  
 अति उपद्रव हा छहमास लों ।

(३)

प्रलय वायु भले बहता रहे,  
 पर सुमेरु कमी चलता नहीं ।  
 अचल आप रहे थक वो गया,  
 जय जिनेश्वर वीर जगद्गुरो ! ।

(४)

जब हतोद्यम हो सुर था गया,  
 प्रभु अकारण बन्धु दयानिधि ।

नयन में करुणाजल था भरा,  
 सुर निरर्थक दुर्गति पायगा ॥

(५)

जय सुखोदधि शामन नाथ हे,  
 जिनपते भगवान् जगदीश्वर ।  
 धन घटी धन भाग्य करे हरि,  
 विनय वदन वीर जिनेश को ॥

चैत्यवन्दन— ४ ।

(१)

स्वयबुद्ध परमात्मा, महावीर भगवान् ।  
 तीर्थकर चोईमवें, तप गुण पुण्य प्रधान ॥

(२)

छहमासीतप दो किये, पांच दिवस रूप एक ।  
 महा अभिग्रह साथ में, क्षमा सहित सविवेक ॥

(३)

चौमासी नव की प्रभु, त्रिमासी दो वार ।  
 ढाई मासी दो दफे, दो मासी छह वार ॥

(४)

ढेठ मास दो वार तप, करें प्रभु सुविलास ।  
 माम रामण बारह तथा, बहुतर आधे मास ॥

(१)

मद्र प्रतिमा दो दिवस, महामद्र दिन चार ।  
दश दिन प्रतिमा सर्गता मद्र वही अविकार ॥

(६)

अष्टम बारह छठ किये, दो सो पर गुनतीम ।  
गुर नर तिरि उपमर्ग को, महने विसया बीम ॥

(७)

साडी बारह वर्ष दिन पनरह में भगवान ।  
घोर तपस्या यों करें, वन्दू पिनय विधान ॥

(८)

कर्म रया केवल वरे, सुखसिन्धु भगवान ।  
जिन हरिपूज्य सदा नमू, दो प्रभु सुग्रत दान ॥

१—शासन पति श्रीमहावीर भगवान् १२ वर्ष ६ महीने और १५ दिन तक छत्रस्थगने में रहे उतने ही समय में आपने १-छहमासी पूरी, दूसरी छहमासी पाच दिन कम २-छीमासी ३-त्रिमासी २-ढाईमासी ६-दोमासी २-डेढमासी १२-मास अमण ७२-भाघे भास २-दिन भद्रप्रतिमा ४-दिन महामद्रप्रतिमा १०-दिन सर्पतोभद्रप्रतिमा १२-तेले २२५-बेले इस प्रकार कुल ११-वर्ष ६-महीने और २५-दिन की दीघ तपस्या की । पारणा दिन ३४९ आये थे । घटन ही दीघ तपस्वी श्रीमहावीर भगवान को ।

## छमासी अभिग्रह चैत्यवन्दन-५

(१)

महावीर महिमा निधि-वद् भाव प्रधान ।  
छहमासी दिन पांचकम-उपवासी भगवान् ॥

(२)

पोष वदी पडिवा प्रभु महाअभिग्रह धार ।  
इस हालत में दे यदि-तोकल्पे आहार ॥

(३)

नृप-कन्या दासी हुई, मुण्डित मस्तक केश ।  
पडी वेडिया पैर हों, रोती हो सविशेष ॥

(४)

अदर बाहिर पग किये, द्वार देश के पाम ।  
उठद बाकुले छाज मे लिये हुए ही राम ॥

(५)

मिक्षा से निवृत्त हो जब मिक्षाचर लोका ।  
अदृम तप के पारणे, धर कर मात्र अशोका ॥

(६)

सतियों में मोटी सती, चन्दन बाला सार ।  
पूर्ण अभिग्रह को करे, धन धन धन अवतार ॥

(७)

सुख सागर भगवान् "जिन-हरि" पूजित अविकार ।  
महातपस्वी वीर को—वदं वारवार ॥



⊗ स्तवन ⊗

ढाल—?

( तर्ज—नमो रे नमो मगल मय महावीर )

नमो रे नमो वर्द्धमान भगवान्

शासन नाथ महान । नमो० ॥ १ ॥

देव सभा म देवपति करे, वीर प्रभु गुणगान । न० ।

त्रिभुवन विजयी भाव अरुम्पित, धारें आत्म ध्यान ।

नमो रे नमो० ॥ १ ॥

सागर चर गभीर धीर प्रभु, अविचल मेरु समान । न० ।

सुर असुर समरथ नहीं प्रभुका, तोड मक शुभध्यान ।

नमो रे नमो० ॥ २ ॥

इद्र सामानिक सगप सुर मग छाया तब अभिमान । न० ।

पापी शोचे कैसे न चलते ?, देखू करके निदान ।

नमो रे नमो० ॥ ३ ॥

दृढ भूमि पढालोद्याने पोलास नामक थान । न० ।

वीर प्रभु पर वीम महाउप-सर्ग कर अज्ञान ।

नमो रे नमो० ॥ ४ ॥

उपसर्गों की दारुणता लख, सुरपति शोक प्रधान । न० ।

सुर सुर भोग तजे मन चिंते धन धन धन भगवान् ।

नमो रे नमो० ॥ ५ ॥

दास—१

(तर्ज—मेख रे, उतारो राजा भरधरी)

रे मन प्रभु गुण में रमो, प्रभु है तारण हार ।

रे मन० ॥ ८१ ॥

सगम सुर उपसर्ग में-अनुपम आत्मध्यान ।

घारें वीर प्रभु नमो-भक्ति भाव प्रधान ।

रे मन० ॥ १ ॥

धूली वर्षा सुर करे, भरे निज मन पाप ।

वज्रमुखी करे चींटियें, पर प्रभु निर्मल आप ।

रे मन० ॥ २ ॥

मच्छंड डास घिमेल से चटकावे प्रभु अग ।

छोडे विच्छु नेवला, चूहे काले भुजग ।

रे मन० ॥ ३ ॥

हाँची हथिणी मदभरे, काटे व्याघ्र कराल ।

अट्टहास्य करे अरे, होकर दुष्ट वेताल ।

रे मन० ॥ ४ ॥

तेज हवा तलवारसी-और आधी अपार ।

फैलावे सुर पर प्रभु-आत्म गुण, अनिकार ।

रे मन० ॥ ५ ॥

⊙ कलश ⊙

शासन पति महावीर स्वामी दीर्घ तपधारी प्रभो !,  
 पावन तपोबल दीजिये दानी गुणी ज्ञानी विभो ।  
 सुर सिन्धु हे भगवान हे हरिपूज्य मैं सेवू सदा,  
 जय हो विजय हो आपकी गुण-कीर्तियां गाउमुदा ॥१॥

स्तवन-२

( तज—केसरिया घासु प्रीत लगी रे सच्चा भावसु )

श्रीवीर प्रभुजी आतम बल शक्ति अविचल दीजिये ॥ टेर ॥  
 छहमासी तप किया आपने, सगम सुर उपसर्गे ।  
 क्षमा महित नित विचरे स्वामी, नामी निजी निसर्गे रे ।  
 श्री वीर० ॥ १ ॥

महा अभिग्रह मे मी अदभुत, छहमासी तप धारा ।  
 चन्दन बाला उडद बाकुले, खोला पुण्य भण्डाग र ।  
 श्री वीर० ॥ २ ॥

कर्म कल्क मिटाया स्वामी, अकलकी अवतारा ।  
 शासन नायक गुण नित गाउ जय जय प्रभु जयकारा रे ॥  
 श्री वीर० ॥ ३ ॥

राग द्वेष जड मूल उखादे, समता गुण भण्डारी ।  
 बीतराम योगीश्वर पूर, जाऊ मैं बलिहारी रे ।  
 श्री वीर० ॥ ४ ॥

यम नियमादिक आठ साधना, महज सिद्ध प्रभु पाये ।

मन वच काया योग एकता आत्म ध्यान लागाये रे ॥

श्री वीर० ॥ ५ ॥

परमात्म पद ज्योति रूपे त्रिभुवन भूप जिनेशा ।

हे प्रभु कृपया दो उपकारी निज पावन गुण लेशा रे ॥

श्री वीर० ॥ ६ ॥

हो अकाम मनसे तप कैसे मारग यह दिखलाओ ।

प्रभु पद मे तन्मय हो जाऊ, यह विधि प्रभु सिखलाओ रे ॥

श्री वीर० ॥ ७ ॥

राज योग हठ योग न जानू, चक्र भेद नहीं जानू ।

इहा पिंगला नहीं सुषमणा, कैवल तुमको मानू रे ॥

श्री वीर० ॥ ८ ॥

उपसर्गों में रह अर्चचल निर्मय विचरु स्वामी ।

वैसी शक्ति दीजे प्रभुवर, सविनय सदा नमामि रे ।

श्री वीर० ॥ ९ ॥

शूलपाणि अरु चण्डकोशिया, गोशाला दुखदायी ।

आत्म बोध पाये प्रभु तुमसे, धन वह पुण्य कमाई रे ।

श्री वीर० ॥ १० ॥

सुखसागर भगवान तुम्हीं हो, जिनहरि पूज्य उदारा ।

शरणागत बत्सल सुख दाता, दो प्रभ पद अविकारा रे ॥

श्री वीर० ॥ ११ ॥

## स्तुति—१

(१)

छहमासी तपसे पावन विनयर वार,  
 अविचल सुगिरिसम सागर समगमीर ।  
 सगम सुर हारा कर उपसर्ग अनेक,  
 वन्दू उपकारी वीतराग सविवेक ॥

(२)

शुशु मित्रों में जिन जा हैं समभाव,  
 अविहारी अनुपम जिनका पुण्य प्रभाव ।  
 उत्तरोत्तर शुद्धि शुक्लध्यान अधिकारी,  
 जिन वदू भावे जगदीश्वर उपकारी ॥

(३)

छहमासी तप की महिमा अगम अपारी,  
 निष्काम भाव से करें भक्ति नरनारी ।  
 भय सागर तिरस्ते भरने पुण्य भण्डारी,  
 जिन आगम गावे जाऊ मैं बलिहारी ॥

(४)

सिद्धायिका देवी साची शमन माई,  
 आराधे उन की करती नित्य सहाई ।  
 जिन हरिपूज्येश्वर वर्द्धमान भगवान,  
 सेवा अनुरागी दे मनवाञ्छित दान ॥

## स्तुति—२

(१)

प्रभु वीर जिनेश्वर महा अभिग्रह धारें,  
 छहमासे कम दिन पांच महातप धारें ।  
 चदन बाला के उडद राकुले नाथ,  
 तप पारें धन धन मबिनय जोहू हाथ ॥

(२)

द्रव्य क्षेत्रादिक भेद विशेष विचार,  
 कर दिव्य अभिग्रह पानन तप गुण धार ।  
 कर्मों को मेटे जगमें जो नर नार,  
 सिद्धातम होते घट्ट धारनार ॥

(३)

सब छोड परिग्रह सयम माधन हंतु,  
 भय सागर तारण कारण शुभ गुण सेतु ।  
 तप महित अभिग्रह महिमा अपरपार,  
 जिन आगम गावे वोलो जय जय कार ॥

(४)

जिन-हरिपूजित पद शासन अनुपम एक,  
 जो सेरें भविजन त्रिकरण शुद्धि विवेक ।  
 सिद्धायिकादेवी सिद्ध करे मनकाज,  
 तपधारी जनके, घरमें अपिचल राज ॥

श्री वीस स्थानक तप-

॥ चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति ॥

चैत्यवन्दन-१

दृढा-

वीस स्थानक साधना, साधे जो नर नार ।  
तीर्थकर पदवी वरे, वन्दू चारवार ॥

( हरिगीत )

शिव पथ सारथ बाह श्रीअरिहत पद पहिले नमू,  
शिव अचल और अनत अव्याबाध सिद्ध सुपद नमू ।  
वर ज्ञान दर्शन चरण भूमि सघ प्रयत्न पद नमू,  
ज्ञानादि पचाचार युत आचार्य पद अनुपम नमू ॥  
सद्धर्म में शिव करण कारण धिविर पद मविनय नमू,  
निज पर समय पाठक बहुश्रुत भक्तिभर भाव नमू ।  
इच्छा सुरोधन घोर तप साधक तपस्वी पद नमू,  
मर्त्यभावित दिव्य आगम ज्ञान पद पावन नमू ॥  
सत्त्वार्थ में श्रद्धा अशक्त भाव दर्शन पद नमू,  
शुभ ज्ञान दर्शन चरण दायक वर विनय पद को नमू ।  
वर चरण करणादि क्रिया चारित्र पद निर्भय नमू,

शील प्रतादिक साधना पद ब्रह्मचर्य सदा नमू ॥  
 प्रति समय शम संवेग आदिक भावना किरिया नमू,  
 धारह प्रकारी ब्राह्म अभ्यतर सुतप पद नित नमू ।  
 सत पात्र में शुभ दान, सर्व कषाय त्याग सुपद नमू,  
 दश विध महागुण भात्र वेयावच्च पद गतमद नमू ॥  
 औषध प्रमुख से साधु जन सुरकर समाधिपद नमू,  
 अक्षर पद श्लोकादि रूप अपूर्व श्रुतपद नित नमू ।  
 गुरु ज्ञान परिणमनादि श्रुत बहुमान पद सादर नमू,  
 प्रवचन प्रभावन पद धरम उन्नति करण कारक नमू ॥

दूहा—

सुखसागर भगवान 'जिन-हरि' पूजित पद सार ।  
 लट भवरी के न्याय से-ध्याउ धन अवतार ॥

चैत्यवन्दन—२ ।

( रामगिरि रागेण-गीयते )

(१)

विंशति स्थानकाराधनायोगतः,  
 सभवेत्तीर्थकर-नामकर्म ।  
 तीर्थकृत्प्रामकर्म प्रमावादहो,  
 जायतेऽनन्तगुणसिद्धिर्गर्भे ॥ विंश० ॥



(२)

चेन्नरो नारि णत्पदाराधन,  
 शुद्धविधि कुर्वते शान्तभावे  
 सर्वसत्ता रिपूज्यात्मतां प्राप्नुयाद्,  
 मेदरहितात्मना सर्वथा वै ॥ विंश० ॥

(३)

एक मेरु पद चापि सर्वाधद,  
 सर्वपद पुण्यमहिमा ह्यनन्तः ।  
 तद्भजन्ता भजन्ता जना भावतो,  
 येन हरिपूजनार्हा भवन्त ॥ विंश० ॥

—१२३३—

चैत्यवन्दन-३ ।

(१)

वीस स्थानरु तप किया, प्रकट पुण्य अगाध ।  
 तीर्थकर पद प्राप्त हो, हो सुख अव्यानाध ॥

(२)

तीर्थकर जो हैं हुए, होंगे तीनों काल ।  
 वीस स्थानरु साधते, तजकर आल पपाल ॥

(३)

अहतादिक वीस पद, भेदा भेद विचार ।  
 निज पद म प्रगटे यदि, धन धन वह नर नार ॥

(४)

शक्ति रूप मयमे रहे, व्यक्त होय विधियोग ।  
व्यक्त हुए उनको नमू, सविनय त्रिकरणयोग ॥

(५)

सुखमागर भगवान जिन, हरिपूजित जगदीश ।  
तन्मय वन्दू तीर्थपति, उपकारी चौबीस ॥



चैत्यवन्दन-४ ।

(द्वन्द्विलिखित)

(१)

त्रिजयि देव जिनेश्वर विश्वमे,  
मय मयकर दुःख हरे मदा ।  
विशद वीम सुथानक सेवना,  
त्रिधि दिग्गाह नमू शुभ भावसे ॥

(२)

जगतमे जितने पद ओर हैं,  
परम आत्म उन्नति के लिये ।  
विलयते सब यानक वीसमें,  
प्रभु दया नित सेवन म करू ॥

(१)

सुरनिधे भगवन् हरिपूज्य ह,  
 सुखद शक्ति कृपाकर दीजिये।  
 करम शत्रु हरा कर मैं करू,  
 तव पदाम्बुज पावन सेवना ॥

स्तवन—१

( तर्ज—सिद्ध चमपद धरो रे भविष्या० )

वीस थानक जय कारी रे सेवो उपकारी अपिकारी ।  
 तीथकर पद हतु भगोदधि तारण सेतु सुखकारी ।  
 रे सेवो वीस थानक० ॥ १ ॥

अरिहत सिद्ध सुपावन प्रवचन आचारज गुणधामी ।  
 धिविर बहुश्रुत दिव्य तपस्वी ज्ञान परम अभिरामी ।  
 रे सेवो वीस थानक० ॥ १ ॥

दर्शन विनय चरण शीलव्रत किरिया करम खपावे ।  
 तपपद त्याग विशद वेयावच शुद्ध समाधि उपावे ॥  
 रे सेवो वीस थानक० ॥ २ ॥

अपूर्वश्रुत अभ्यास ज्ञान बहु, मान अबोध निवारे ।  
 तीर्थ प्रभावना करते आत्म, परमात्म पद धारे ॥  
 रे सेवो वीस थानक० ॥ ३ ॥

प्रति पद महिमा अनुपम अद्भुत श्रीसद्गुरु परतत्रे ।  
सरल अशठ धिर भाये साधक विचरे भाव स्वतंत्रे ।  
रे सेवो वीस थानक० ॥ ४ ॥

प्रतिपद त्रत छठ अहम, भाये वीस वीस जिनराया ।  
ज्ञातार्धर्म कथादिक पावन सूत्रे भेद यताया ।  
रे सेवो वीस थानक० ॥ ५ ॥

तप पद मे अधिका तप तपते आठ करम तप जावे ।  
कनकोपलरत आतम निर्मल-ज्योति आप नगावे ।  
रे सेवो वीस थानक० ॥ ६ ॥

विकथा विरहित जीवन पावन विषय विकार विहीना ।  
वीस थानक शिव थानक दाता सचित आनदपीता ।  
रे सेवो वीस थानक० ॥ ७ ॥

प्रातः सध्या आवश्यकप्रिधि-प्रतिक्रमण शुभ भावे ।  
पदगुण माला ध्याने पूरव सचित पाप हटावे ।  
रे सेवो वीस थानक० ॥ ८ ॥

देव वदन गुरु वन्दन मविनय तन्मय तद्गुणयोगी ।  
अविराधक साधक हो अघ्या-त्राधपरम सुरभोगी ।  
रे सेवो वीस थानक० ॥ ९ ॥

चउ शत त्रत छठ अहम तपसे आरधन हो पूरा ।  
तीर्यकर पद नूर शकट हो, फर्में का चकचूरा ।  
रे सेवो वीस थानक० ॥ १० ॥

उद्यापन अधिमारी होते सुखमागर भगवाना ।  
हरि पूजित जिन भाषित माधन साधे पुण्य प्रधाना ।  
र मेवो वीम थानक० ॥ ११ ॥

स्तवन—२ ।

( तत्र—विना प्रभु पासके देखे मेरादिल बेकगरी है )

( गजल )

नमू जिन देव जयकारी, हृदय शुधभाव लाकरके ।  
जपू नित नाम की माला, हृदय शुधभाव लाकरके ॥ १० ॥  
तिरावे तीर्थ कहलाता, प्रभुजी आप तीर्थकर ।  
मैं आउ आप तक कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ १० ॥  
प्रभुजी बीस थानक तप, तपाता आठ कर्मों को ।  
सत्रिधि साधू कहो कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ १० ॥  
जिनेश्वर आप ज्योतिर्मय, महा अधेर हरते हैं ।  
सुज्योति पाउ मैं कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ १० ॥  
प्रभु अरिहत ह रामी, सुनामी मिद्व सुखकारी ।  
बनू सुखिया यहा कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ १० ॥  
अगम सुत्र सिन्धु हे भगवन् परम हरिपूज्य उपकारी ।  
मिलू मैं आपसे कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ १० ॥

### स्तवन—३ ।

( तज—मैं आया तेरे द्वार पर कुट्ट लेकर जाउगा )

श्री तीर्थंकर भगवान तारणहार ध्याउगा ।  
 पद सेवा करके प्रेम से तन्मय हो जाउगा ॥ १ ॥  
 वीस स्थानक साधना खुद करके दिखलाई ।  
 मैं भी निज शक्ति साधनामे नाथ लगाउगा । श्री० ॥ १ ॥  
 जगजीव दयाका पाठ प्रभुवर पहिले दर्शाया ।  
 निज जीवन मे मैं दया भावना की अपनाउगा श्री० ॥ २ ॥  
 सब माया मिथ्या जाल को जिनवर ने तोडा है ।  
 प्रभु सत्य साधना मे निज मन को रोज रमाउगा । श्री० ॥ ३ ॥  
 नित महा जागती जोत प्रभु परमात्म पूरे है ।  
 निज अतर आत्म लीन हुआ मैं भी गुण गाउगा । श्री० ॥ ४ ॥  
 प्रभु सुखसागर भगवान जिन हरिपूजित उपकारी ।  
 मैं अविकारी-योगी से पूजा प्रेम रचाउगा श्री० ॥ ५ ॥



### स्तवन—४ ।

( तज—वेसरिया थासु प्रीत लगीरे सच्चे भाव सु )

तीर्थंकर वदो तारे दुःख वारे तिहुकाल मे ॥ १ ॥  
 अनुपम आत्म दर्शन योगे, परमात्म पद ध्याने ।

जल में कमल रहे ज्यों जीवन, साधकपद सनमाने ।  
रे तीर्थकर वदो० ॥ १ ॥

महा मोहमति मूढ जगत जन हों जिन आसन रागी ।  
आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भाव सुखी बड भागी ।  
रे तीर्थकर वदो० ॥ २ ॥

तीन भुवन उपकार भाव, कल्याण मित्र जयकारी ।  
पुण्य महोदय गुणी महाशय, अविकारी अवतारीरे ।  
रे तीर्थकर वदो० ॥ ३ ॥

वीस स्थानक महा साधना, साधक निज भव तीजे ।  
उत्तरोत्तर सुकृत सुख भोगी, प्रभुता गुण रस भीजे ।  
रे तीर्थकर वदो० ॥ ४ ॥

सद्य चतुर्विध तीर्थ धापते, अद्भुत अतिशय धारी ।  
तीर्थकर वर नाम कर्म की, सफल करें बलिहारी ।  
रे तीर्थकर वदो० ॥ ५ ॥

जनम-मरण-जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता ।  
तीर्थकर दर्शन धन पाउ, धन दिन पुण्य प्रभाता ।  
रे तीर्थकर वदो० ॥ ६ ॥

प्रभु दर्शन परमारथ पूरण, जो कर पावे प्राणी ।  
ज्योतिर्मय जग म वह पावन, खोले निज गुण खाणी ।  
रे तीर्थकर वदो० ॥ ७ ॥

अरिहतादिक वीस पदों की, सेवा शिवसुख कारी ।  
अप्रमत्त भावे कर भविजन, पावें पद अविकारी ।  
रे तीर्थकर वंदो० ॥ ८ ॥

आठ सिद्धि नवनिधि निज घरमें प्रकटे परमोदारी ।  
तीनलोक साम्राज्य संपदा दासी बने विचारी ।  
रे तीर्थकर वंदो० ॥ ९ ॥

वीस स्थानक विधि जिन आगम, गुरु गम से नरनारी ।  
आराधे साधे निज सिद्धि, अजरामरपदधारी ।  
रे तीर्थकर वंदो० ॥ १० ॥

सुखसागर भगवान महोदय, जिन हरि पूजित स्वामी ।  
वीस स्थानक गुणी गुण गाउ, सादर सदा नमामि ।  
रे तीर्थकर वंदो० ॥ ११ ॥



### स्तुति—१ ।

वीस स्थानक मे गुणि गुण मेदामेद,  
ध्याता जो ध्यावे निर्भय भाव अखेद ।  
तीर्थकर पदवी पावे पुण्य प्रधान,  
वदू विधियोगे त्रिकरण शुद्धिविधान ॥१॥  
त्रैकालिक भावे तीर्थकर भगवान,  
भव सागर तारण कारण रूप महान ।



होते हैं होंगे और हुए पदवीम,  
 सेवा से मेरा बद् जिन जगदीश ॥२॥  
 वीस स्थानक तप साधन सुखद विधान,  
 ज्ञातादिक आगम गावे गुरु गम ज्ञान ।  
 आराधे भविजन पावे पद कल्याण,  
 सुविहित जिन आगम वन्दू जीवन प्राण ॥३॥  
 हरि पूजित श्री जिन शासन वासित भार,  
 मवि वीस स्थानक साधन पुण्य प्रभाव ।  
 सुर असुर उन्हीं के होंय सहायक आप,  
 फैले त्रिभुवन में साधक पुण्य प्रताप ॥४॥

### स्तुति—२ ।

वीस स्थानक मे सत्य दन गुरु धर्म,  
 तीनों तत्त्वों से कट जाते दुष्कर्म ।  
 तीवकर पदवी प्रकटे तीनों ग्ल,  
 बद् नित मरिनय पावन पुण्य प्रयत्न ॥१॥  
 वीस स्थानक हैं निज आत्म के भाव,  
 सार्धे जो भविजन परमात्मपद दाव ।  
 सत चित आनदे रमण करें धान भाग,  
 वन्दू ज्योतिर्मय वीतराग महाभाग ॥२॥

प्रति पद की महिमा जगमें अपरपार,  
 सुत्रत विधियोगे आराधे नर नार ।  
 आगम अनुमारे वीम वीम उपचाम,  
 वेला तेला से प्रगटे परम प्रकाश ॥ ३ ॥  
 वीसस्थानक सुम्भमागर दिव्य तरंग,  
 भवताप मिटावें सादि अनत सुभग ।  
 आराधरु जन के सुरगणपति हरिआप,  
 फैलावें जगमें अनुपम पुण्य प्रताप ॥ ४ ॥

### स्तुति—३ ।

अरिहत सिद्ध प्रवचन धरि थिपिर बहुश्रुत वदोजी,  
 तपसी ज्ञान सुदर्शन मविनय चारित्र शील सुखरुदोजी ।  
 किरिया तप वरत्याग वेयावच समाधि श्रुतअभ्यासोजी,  
 ज्ञान सुमक्ति तीर्थ प्रभावन थानरु वीम विलामोजी ॥ १ ॥  
 समकितधारी विषय विरागी जलमें कमल समानाजी,  
 जग जन प्रभु शासन अनुयायी करण सुभाव प्रधानाजी ।  
 वीम स्थानक आराधन कर तीर्थरु-पद-गारीजी,  
 हुए हैं होते हैं होंगे वन्दू गुण अरिकारीजी ॥ २ ॥  
 चार सो त्रत या वेला तेला प्रतिपद वीस विधानेजी,  
 तन्मय होरु पद गुण माला वीस वीम वर ध्यानेजी ।  
 वीस स्थानक आराधन त्रिधि जिन आगम से जानोजी,  
 व्रत पूरण उद्यापन पावन निजजीवन धन मानोजी ॥ ३ ॥  
 सुखसागर भगवान महोदय जिन शामन सुखकारीजी,

हरिपूजित वीस स्थानक तप जो करते नर नारीजी ।  
सासन देवी देव उन्हीं के होवें सानिधकारीजी,  
करण करावण अनुमोदन फल पावें जाउ बलिहारीजी ॥ ४ ॥

### स्तुति—४ ।

( यशस्थ )

श्री विंशतिस्थानक-साधनेन,  
तीर्थकरत्व लभते महात्मा ।  
ज्योति स्वरूप दधतं सुमक्त्या,  
बन्दे सदानन्दि-हृदानिश तम् ॥ १ ॥  
श्री विंशति स्थानक एव साधु-  
स्फूर्जत्सुदमादिकतत्त्वमस्ति ।  
ये तन्मयत्व दधते जगत्या,  
ताम्रौमि सिद्धान्निजरूपसिद्धान् ॥ २ ॥  
श्री विंशतिस्थानक सद्विधान,  
जैनागमे प्रोक्तमगम्य-रूपम् ।  
रत्नत्रय गत्य-सुग्याभिराम,  
भक्त्या भजन्ता भवरोगमुक्त्यै ॥ ३ ॥  
श्री विंशति-स्थानक-साधकाना,  
प्रेङ्खत्पदस्याद्हरिपूज्यमेव ।  
समऽपि देवा मतत सपन्तात्,  
साहाय्यमिद्ध ददते स्वय वै ॥ ४ ॥

श्री उपधान तप

\* चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति \*

चैत्यवन्दन—१ ।

बुद्धा—

स्वस्ति श्रीमुखकर सदा, वर्द्धमान भगवान् ।  
स्वयंबुद्ध शासन पति, वन्दू विनय विधान ॥१॥  
प्रभु प्रवचन पावनविधि, परमात्म-पद हेत ।  
योगावचक भाव से, माधू शिर सकेत ॥ २ ॥  
निज आत्म उद्धार में, पञ्चाचार विचार ।  
अनलस भावे साधना, भापे जिन जयकार ॥३॥  
उपादान अध्यात्म गुण, ज्ञानाचार प्रधान ।  
सहज सिद्धि साधक वरें, उद्यम कर उपधान ॥४॥  
सुप्त सागर भगवान् जिन, हरिपूज्येश्वर वीर ।  
आज्ञा की आराधना, करू धन्य तकदीर ॥ ५ ॥

---

१—काले विगण्य बहुमाणे “उर्ध्वहाणे” इति ज्ञानाचारे भेद

## चैत्यवन्दन—२ ।

( हृतधिलम्बित छन्द )

परम पावन वीध विधान म, रविममान जिनेश्वर वीर को ।  
 सकल योग समाधि निमित्तसे, हृदयस नत मस्तक हो नमू ॥१॥  
 भव भयकर भागर म अहो ! सन्निधि साधरु तारण के लिये ।  
 विजयी वीर जिनेश्वर देवका, जयतु शामन जीवन पोतसा ॥२॥  
 “उप” समीप मदा परमात्मक, सुगुरु के सहयोग विशेष से ।  
 प्रति निजातम “धान” सुधारणा, सफलता प्रभु के उपधानमें ३  
 समपधान रहे उपधान म, प्रभु पद प्रकटे परमात्मता ।  
 परम तत्त्व विक्राम विलाभते, जनमना मरणा मिटता ममी ॥४॥  
 सहज हो सुखसागर लीनता, सुगम हो भगवद्गुण भावना ।  
 जिमि करें ‘हरि’ वन्दन वीर को, तिमि करू उपधान विधान से ५

## चैत्यवन्दन—३ ।

( वसततिलका छन्द )

श्रीवर्द्धमान भगवान महान वीर !  
 सर्वाङ्गि पाप मल शोधन हेतु नीर ! ।  
 समार ताप शमनार्थ समीर सीर,  
 वन्दू सदा मरल हो भवसिंधुतीर ॥ १ ॥

हे नाथ नित्य भवदीय पुनीत आज्ञा,  
 पालू यथा प्रभु मुझे बलशक्ति देना ।  
 हो कर्म रोग भव भोग-वियोग मेरे  
 साधू स्वयं चरणमें सहयोग सेवा ॥ २ ॥  
 निस्सारता प्रकट है फिर भी प्रभो हा,  
 ससार में रत रहू सुविडम्बना है ।  
 सद्बोध शक्ति दयया वरदान देना,  
 त्यागू निजात्म उपधान करू यथा मैं ॥३॥  
 स्वामी न है हृदय में श्रुत भक्ति मेरे,  
 किंचिद् नहीं कर रहा गुरु भक्ति को भी ।  
 पुण्यप्रधान उपधान विधान योगे,  
 साधू करो सुकरुणा करुणानिधान ! ॥ ४ ॥  
 देवाधिदेव सुखसिन्धु जिनेश वीर !  
 आधार एक जगमे वस आपका है ।  
 तीर्थेश शामनपते ! हरिपूज्य नाथ !  
 स्वीय प्रसाद महिमा दिखलाइयेगा ॥ ५ ॥

१—उपधान में १—प्रभु आज्ञा का पालन २—तपस्या से कर्मों की निर्जरा ३—असार भूत शरीर में आत्म साधन रूप सार ग्रहण ४—श्रुत भक्ति ५—सद्गुरु भक्ति ६—इन्द्रिय जय ७—सर्व साधना आदि सद्गुणान की परंपरा होती है ।

## चैत्यवन्दन—४ ।

( शिखरिणी-छन्द )

अनतात्म ज्योतिः प्रकट विभय श्रौट महिमा,

चिदानन्द स्फूर्ति प्रगुणगणसत्कीर्तिगरिमा ।

अरागी अद्वेषी परम ममता धाम जगर्म,

महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर । ॥ १ ॥

सुनाये भव्यों को समवसरणे विस्तृततया,

समी सत्त्वों के विशदविधिसे अर्थ कहके ।

उपादेय-ज्ञेय-प्रमुख जड-हयादिकु जहो,

महावीर-स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर । ॥ २ ॥

निजात्मा में ज्ञानादिकु गुणमणिज्योतिरहती,

मिलेगी खोजोमे नियम उपधान व्रतितया ।

प्रभो वाणी सखी 'हरि' सुन सुरीहों फिर कहो,

महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ॥ ३ ॥

१—अथ भासह अरागा सुत्त गधति गणहरा निजणा। नियुक्तिः।

२—उपधान तप से स्वम्यरक्षण ज्ञान चारित्र आदि गुणों की ज्योति प्रकटती है ।

## चैत्यवन्दन—५ ।

( शार्दूल विक्रीडित )

जीवाजीव विचारमें स्फुटतया सिद्धान्त सचा कहा,

माने भेद विवेक से भवि करें पावे स्वय सिद्धता ।

नारी या नरका नहीं कुछ जहा है भेद या खेद ही,

वैसा श्री जिनगीर का पद नमू स्याद्वाद शोभामयी ॥१॥

जीवात्मा जडभाव छोड निजमे खोजी बने औ यदि,

ज्ञानी के उपधान मे रत रहे हो मुक्ति गामी सही ।

आठों कर्म क्लेश लेश न रहे पावे निजी सम्पदा,

ऐसे श्री जिनगीर के वचन को सेवू मुनू सर्वदा ॥ २ ॥

जो सच्चे सुख सिन्धु बन्धु जमके कल्याणकारी सखा,

हैं श्रीमान् भगवान् सर्वनयसे पुण्य प्रमाणोज्ज्वल ।

जो सच्चित् हरिपूज्य निर्भय निजानदी महावीर हैं,

धन्यात्मा उपधान मे विलसता बन्दू उन्हें भक्ति से ॥३॥

---

३—भगवान् महावीरदेव स्त्री पुरुष दोनों को मोक्ष का अधिकारी मानते हैं अत उपधानके भी स्त्री पुरुष दोनों अधिकारी हैं ।





धउगति भीम भयंकर भवमे, मानव भव सुखदाया ।  
 पाया सफल करू प्रभु तुझपद, उपधाने मन भाया रे । म० १० ।  
 सुखमागर भगवान् तूही हैं, जिन हरिपूज्य हमेशा ।  
 दर्शन वदन स्पर्शन करते, रहे न कर्म कलेशा रे ॥ म० ११ ॥

स्तवन—२ ।

( तर्ज—जिह्वा की चद्रप्रभु जिनचन्द्र नमो सुप्रकदारे )

तारक तीरथ नाथ नमू उपकारी रे वर्द्धमान भगवान् ।  
 केवलज्ञान विराजित नित अविकारी रे सुजान ॥ टेरे ॥  
 ममवसरनमे बारह परिपद आगेरे वीतराग महान ।  
 तप उपधान प्रधान विधान सुभापेरे सुजान ॥ ता० १ ॥  
 आतप शत्रु कर्म महा दुखदायी रे हैं अतिबलवान ।  
 बिन तालीम न जीत सक जन कोई रे सुजान ॥ ता० २ ॥  
 तज परमाद विनाद पराक्रम धागे रे तन मन थिर ठान ।  
 कर्म पराजय होते जय जय कारी रे सुजान ॥ ता० ३ ॥  
 पाचों समवायी कारण मे जानों रे उद्यम परधान ।  
 गुरु गम कर उपधान सुसाधो सिद्धि रे सुजान ॥ ता० ४ ॥

१—कार्य सिद्धि में काल स्वभाव नियति पूर्ववृत्त कर्म और पुरुषाकार ये ५ समावायी कारण माने जाते हैं ।

परमगल-धृतगुन्ध शुभगन् कारी रे परमेष्ठीस्थान ।  
 निज आतम मे व्यक्त करो व्रतयोगे रे सुजान ॥ ता० ५॥  
 प्रतिक्रमण धृत रन्ध ममागघन से रे तज पाप निदान ।  
 मय सताप ममाप्त समी हो जावे रे सुजान ॥ ता० ६ ॥  
 शकन्त अष्ययन प्रभु गुणगाओ रे चढके गुणयान ।  
 उत्तरोत्तर प्रभु पावन पदनी पाओ रे सुजान ॥ ता० ७ ॥  
 चैत्य स्तव अष्ययन मनन चितन से रे लट भैवरीस्थान ।  
 करके आतम परमातम लय लाओ रे सुजान ॥ ता० ८ ॥  
 नाम स्तव अष्ययने जिन चौरीसी रे जीवन परमान ।  
 निजजीवन उन्नति हित पूनो भावे रे सुजान ॥ ता० ९ ॥  
 धृत स्तव मिद्धन्तव साधन करते रे प्रकटे विज्ञान ।  
 ज्योतिर्मय निर्मय तन्मय हो जाओ रे सुजान ॥ ता० १० ॥  
 सात स्रो उपधान मान भय भागे रे सुखमात प्रधान ।  
 जागे गुण अनुगगे शिवसुर्य आगे रे सुजान ॥ ता० ११ ॥  
 सुप्रसागत भगवान परमपदगामी रे नामी अरधान ।  
 घन उपधान विधान बनाया घ्याउ रे सुजान ॥ ता० १२ ॥  
 जिन हरि पूज्य सुतीरथनाथ नमामि रे ममविक्रमितप्रान  
 बद्धमान भगवान वीर बलिहारी रे सुजान ॥ ता० १३ ॥

२-नषकार मन्त्र । ३-इर्याचहिषा और नक्सउत्तरी ।

४-नमुत्थुण । ५-अरिदन चैद्याण । ६-लोगस्म ।

७ पुकलघानीघट । ८-मिद्धाणयुद्धाण ।

स्तवन—३ ।

( तर्ज—ल्लेखदार बीजूडो )

वीर प्रभु की सेवा वीर बनावे हो,

मन भावे त्रिरुणशुद्धेनित्यकरु ।

कायरता मिट जावे शक्ति आवे हो,

मनभावे त्रिरुणशुद्धेनित्यकरु ॥ टेर ॥

प्रभु पद के उपधाने विविध विधाने हो,

इकताने प्रभु पद ध्यान करु ।

गुणरतनों की माला शोभ चढावे हो,

शुभभावे दोष सारा दूर करु ॥ वी० १ ॥

इरुसो चौदह दिन उपधाने पूरा हो,

हो शूरा नूर अपना प्रकट करु ।

छत्रवाचना तेरह वर अनुक्रम से हो,

गुरु गमसे दुर्मति दूर करु ॥ वी० २ ॥

सूत्रअर्थ तदुभय निर्भय प्रभु वाणी हो,

गुणग्वाणी अनलस भावे सुना करु ।

चित्तन मनन निदिध्यासन जचिरामी हो,

परिणामी आत्मबोध शोध करु ॥ वी० २ ॥

सूत्र ग्रहण की शक्ति वह उद्देशा हो,  
 मरि शेषा समुद्देश भाव मरु ।  
 सूत्र पठन पाठन की पारन आशा हो,  
 अनुज्ञा सदगुरुर से प्राप्त करू ॥ वी० ३ ॥  
 महामत्र नधकार सुमहिमा भारी हो,  
 अधिमारी माधू सहजे मिद्धि करू ।  
 पूर्ण चतुर्दश मार भूत सुखकारी हो,  
 अत्रिकारी पाप ताप परिहार करू ॥ वी० ५ ॥  
 आत्म गुण पोषक पौषध व्रतधारी हो,  
 निरधारी निरतिचारतया विचरू ।  
 दिव्य देव वदन कर नित्यानन्दी हो,  
 निर्द्वन्दी सदगुरु सेव करू ॥ वी० ६ ॥  
 देहादिक ममता तज जिनपद ध्यानी हो,  
 गत मानी सौ लोगस का ध्यान करू ।  
 परमेष्ठि गुणमाला विमयात्रीसे हो,

१—सूत्र ग्रहण की शक्ति को अर्थात् सूत्रारम्भ को 'उद्देश' कहते हैं । २—सूत्र ग्रहण की विशेष शक्ति को 'समुद्देश' कहते हैं । ३—सूत्र पठन पाठन की आशा को 'अनुज्ञा' कहते हैं । ४—उपधान में पौषध करना होता है । ५—सौ लोगस्म का काउस्सग करना होता है । ६—२० वर्षी नयकार वाली अपनी होती है अथवा जीवविचार नयतत्त्वादिक प्रकरणों का २००० श्लोक प्रमाण स्वाध्याय करना चाहिये ।

निज जीसे पिण्डस्थादिकु मेद करू ॥वी०७॥  
 दुर्लभ मानत्र भव मे प्रभु पद सेवा हो,  
 सुख मेरा देती है नित्य करू ।  
 आतम परमातम पद पुण्य प्रकाशे हो,  
 सुविलासे अनहद आनद मौज करू ॥वी०८॥  
 सुखसागर भगवान वीर जय कारी हो,  
 भयहारी सेवा करके अमय वरू ।  
 जिन हरि पूज्य परमपद के उपधाने हो,  
 गुणठाने ऊचे ऊचे चढा करू ॥ वी० ९ ॥

स्तवन—४ ।

( तर्ज-प्रभु धर्मनाथ मोहे प्यारा जगजीवन मोहन गारा )

राग-बनभारा

महावीर प्रभु भगवाना, नित वन्दू विनय निधाना ।  
 प्रभुका करके उपधाना, नित करू प्रभुपद ध्याना ॥ टेरे ॥  
 स्वामी उपधान बताया, सद्गुरु गम विधि सिखलाया ।  
 साते भय सात भगाया, सुख सात प्रधान उपाया ॥म०१॥  
 पहिले दूजे उपधाने, वर नदी रचना ठाने ।  
 दिन बीस बीस व्रत साडी चारह जाने ॥म०२॥

शुभ पाच तीम दिन तीजे, व्रत मी उन्नीम करीजे ।  
 चौथा दिन चार वहीजे, टाई व्रत माघन कीजे ॥५०३॥  
 पचम अडतीम गिनाया, व्रत साडी पनरह पाया ।  
 छठे छह दिन दिसलाया, व्रत माढातीन सुनाया ॥५०४॥  
 सप्तम उपधान सुहाया, व्रत चौत्रिहार इरु गाया ।  
 क्रम सुविहित गुरु ममज्ञाया, आतमगुण अधिक बढाया ॥५०५॥  
 कही सूत्र वाचना सारी, तेरह अनुपम अविकारी ।  
 छत्रारथ उमय विचारी, भवसागर तारणहारी ॥५०६॥  
 हो माघधान उपधाने, पौषघ व्रत पुष्टि विधाने ।  
 सो लोगस पावन ध्याने, प्रभु माला बीस बखाने ॥५०७॥  
 उप आत्म निरुट में जानों, कर्मों की हाण पिछानो ।  
 'उवहाण' अर्थ विज्ञानो, शिवमाघन सिद्धि निदानो ॥५०८॥  
 जिन आना पालन होवे, सुनत साधन शुभ होवे ।  
 फिर पाप ताप मिट जावे, गुणठान त्रिशुद्धि उपावे ॥५०९॥  
 सुकृत जल की घटमाला, मुक्ति रमणी बरखाला ।  
 वरमूर्त रूप गुणमाला, गणपति से पहरू माला ॥५०१०॥  
 सुखसागर श्री भगवाना, शमन पति वीर महाना ।  
 जिन हरिपूजित उपधाना, साधू धन पुण्य प्रधाना ॥५०११॥

१—मुक्ति कनी बरमाला, सुकृत जलकपणे घटमाला ।  
 शाक्षादिषु गुणमाला, माला परिधीयते ध ये ॥

स्तवन—५।

( तर्ज—भीनासर स्वामी अतरजामी तारों पारसनाथ )  
( राग—माढ )

जिनवर जयकारी वीर तुम्हारी सेवा सुसदातार ।  
उपधान विधाने पुण्य प्रधाने साधू जगदाधार ॥ टेरे ॥  
भवसागर तारक प्रभुवर तीरथ प्रकटाया है आप ।  
तीरथ नाथ अनाथ के रक्षक बद्ध हे मा बापरे ॥जि०१॥  
भव भव भटका बहुविध नटका साग अनेक बनाय ।  
पर नहीं खटका अटका मेरा दो झटका जिनराय रे ॥जि०२॥  
तुम पद पावन जीवन मेरा कर पाउ भगवान ।  
प्रभु उपधाने मानू घन घन सफल सकल अवधान रे ॥जि०३॥  
शासन वासित चित्त बनाउ छोडू आल पपाल ।  
सुप्रत विधि विरचाउ गाउ प्रभु गुण गीत रसाल रे ॥जि०४॥  
अति व्याप्ति अव्याप्ति असमय दोष रहित गुण ज्ञान ।  
आतम का प्रकटाउ उज्वल, करके घर उपधान रे ॥जि०५॥  
आधि व्याधि और उपाधि—ससारी जजाल ।  
घेरा डाल रहे मुझ पे पर, हैं प्रभु आप दयाल रे ॥जि०६॥  
ज्ञान एकाग्ररूप गुण शोभरु—सयम गुप्ति प्रवान ।

१—नाण पयासग सोदखो तवो सजमोय गुत्ति करो ।

तिण्हपि समाओगे मुक्खो जिण म्वासणे भणिओ ॥

आवश्यकनियुक्ति



आप बताया मोक्ष उपाउ, करके प्रभु उपधान रे ॥जि० ७॥  
 काल अनादि कुबोध मिटाउ आतम बोध विशोध ।  
 कर्म कलरु मिटा अरुलकी-पाउ गुण अरिरोध रे ॥जि० ८॥  
 प्रभु पद सेवा निजपद दायरु-शिव सपत्ति निधान ।  
 सरल सुकोमल भाष धरु नित-साधू हो सावधान रे ॥जि० ९॥  
 सुखसागर भगवान तुम्ही हो-शामन नायक धीर ।  
 हो सर्वत्र कहू क्या स्वामी सिखलादो तदवीर रे ॥जि० १०॥  
 जिन हरि पूज्य प्रभु तुम सेवा कर पाउ अरिराम ।  
 केवल एक यही वर मागू करके पुण्य प्रणाम रे ॥जि० ११॥

### स्तुति—१ ।

श्री वर्द्धमान जिनेश जगदाधार शासन नाथ को ।  
 वर विनय वन्दन के लिये मैं नित्य जोडू हाथ को ॥  
 प्रभु चरण में उपधान की आराधना सुगुदायिका ।  
 साधु सुखद वामालिका देती स्वय शिखनायिका ॥१॥  
 सद्गान के आचार में उपधान भेद विशेष है ।  
 करते हुए गुरु बोध से सब दूर होते क्लेश हैं ॥  
 होते हुए होंगे त्रिकालिक भाव में उपधान से ।  
 जन सिद्ध जो वदू उन्हें शुभ भावपूर्ण उपधान ॥२॥  
 उपधान अथ विपेश फरमाया स्वय अरिहत ने ।  
 वह सूत्र में गूथा मधुर गणधर गुरु गणवतने ॥

उपधान सूचक सूत्र पावन अर्थ तदुभय सर्वदा ।  
 सुनता रहू करता रहू श्री सुगुरु गम पाकर मुदा ॥ ३ ॥  
 उपधान के सुविधान में जो सावधान बने रहें ।  
 सुखसिन्धु वे भगवान पदवी अन्त में पाते रहे ॥  
 समदृष्टि देवी देवगण नायक हरि संकट हरे ।  
 सपति भरे सुखको करे जय जय हमेशा उचरे ॥ ४ ॥

### स्तुति २ ।

अधिकार विना की बातें व्यर्थ अनेक,  
 अधिकारी पाते सकल सफल सविवेक ।  
 चौदह पूरब का सार मत्र नवकार,  
 अधिकारी होकर आराधू जयकार ॥ १ ॥  
 सुविहित गुरु सेवा दे अधिकार अशेष,  
 अधिकार बताया उपधाने सविशेष ।  
 जो पुण्य प्रभावे पावें भावें भाव,  
 साधक सिद्धातम वदू निजगुणदाव ॥ २ ॥  
 उपधान बताया सात भेद सिद्धान्त,  
 आराधन करते भय भागे एकान्त ।  
 श्रीमहानिशीधे उत्तराक्षयणसरूप,  
 गुरु गम आराधू दूर करू भवकूप ॥ ३ ॥  
 हरि पूजित श्रीजिनशासन वासित देव,  
 उपधानी जनकी आपद हरे सदैव ।

सुरपणि सुरतरु मी सुलभ रूप हो जाय,  
प्रसुदित हो जगजन पावन कीरति गायँ ॥ ४ ॥

### स्तुति ३ ।

शामन पति वद् महावीर भगवान्,  
प्रभु सभप्रभरणमें उपदर्श उपधान ।  
आराधक भविजन यथाशक्ति आराध,  
सिद्धिगतिपावें निजसुख ब्रव्यावाध ॥ १ ॥  
उपधान बतये सात, अनेक प्रकार,  
आराधन विधि मी यथायोग्य अधिकार ।  
साधक जन साधे कर्म रोग मिट जाय,  
निजपद परमेष्ठी पावन गुण प्रकटाय ॥ २ ॥  
जीरा जीरादिक तत्त्वारथ उपयोगी,  
बारह व्रत धारी दशविरतिगुण भोगी ।  
उपधान विधानी होते हैं गुणरागी,  
जिन आगम गावे जीवन म बडभागी ॥ ३ ॥  
सुखसागर सचा पद उपधान प्रधान,  
आराधक होते अतगति भगवान् ।  
जिन हरि पृजित पद सेरें देवी देव,  
दुख दोहग टाले सुख पूरें स्वयमेव ॥ ४ ॥

## स्तुति ४ ।

जिन आज्ञा पालन-सत्तर साधनयोग,  
 सुत्रत आराधन आत्म गुणउपयोग ।  
 उपधाने होते भाषे श्रीभगवान,  
 महावीर जिनेश्वर पद विनय विधान ॥ १ ॥

अतिचार विना की किरिया कारण रूप,  
 करते जो भविजन होते त्रिभुवन भृष ।  
 सब कर्म खपा कर परमात्म पद आप,  
 प्रगटावें वन्दू मिद्व जगत मायाप ॥ २ ॥

श्रीपचमगलश्रुत-सधादिकु है सात,  
 उपधान करणसे भागे भय भी सात ।  
 सुखसाता प्रकृते यथाशक्ति अभिराम,  
 जिन आगम बोले प्रात करू प्रणाम ॥ ३ ॥

सुखसागर प्रभुवर महावीर भगवान,  
 जिन हरिपूज्येश्वर उपदेशा उपधान ।  
 आराधे उनक रोग शोक सताप,  
 समकित दृष्टि सुर मटे बढे प्रताप ॥ ४ ॥

## स्तुति ५ ।

उप निकट

नादिकु गुणधाम,  
 धान अर्थ अभिर

फरमायें प्रभुवर वीतराग अरिहत,  
 नित वन्दू भावे श्रीजिनवर जयवत ॥ १ ॥  
 उव आतम निःफट हाण कर्म की साध,  
 उवहाण अरथ यह ममरथ अव्याबाध ।  
 जो पायें आतम परमातम पद रूप,  
 वदू नित उनको सत चित ज्योतिमरूप ॥२॥  
 बीसठ दो भासे वर पैतीमड एक,  
 अठ्ठाबीसठ चउ छकड एकड एक ।  
 सविवेक समाराधन जिन आगम सार,  
 वन्दू आराधू पाठ पद अविकार ॥ ३ ॥  
 सातों उपधाने सुखसागर भगवान,  
 जिनहरि पूज्येश्वर फरमाया फरमान ।  
 आराधो भविजन दरी दव हमेश,  
 सब चिता चूर चितित दें मविशेष ॥ ४ ॥

इति उपधान तप चैत्यवन्दन-स्तवन  
 स्तुति सग्रह समाप्त

# \* श्रीमहावीर सप्तविंशति भववर्णन \*

❀ वृहत् स्तवन ❀

दोहा—

श्री महावीर जिनेंद्र को, नमन करू चित लाय ।  
भव सतावीम मैं कहू, सुख कर गुरू सुपमाय ॥

ढाल १

घर्दमान त्रिनगर तणा जी चरण नमू चितलाय० (इन् तर्ज में)  
मविक्रजनरीर चरित चितधार, वरलो सपकित सार भ० ॥टेर॥  
पश्चिम महाविदेह में जी, “नयमार” नाम सुधार ।  
काष्ठ कारण रण में गयो जी, लागी भूग्य अपार ॥भवि० १॥  
भोनन करने के लिये जी, बैठा तरुवर छाह ।  
ततखिण मन परिणति हुई जी, पामी हर्ष उछाह ॥भवि० २॥  
अतिथि जो आवे यहा जी, होवे आतमशुद्ध ।  
भाग्य उदय हो माहरो जी, देरू दान विशुद्ध ॥ भवि० ३ ॥  
मारग सम्भुग्य देखते जी, बँठो “श्रीनयमार” ।  
भाग्य मयोगे भेटिया जी पघ चूके अणगार ॥ भवि० ४ ॥  
मन में हर्ष घरी करी जी, पहुँचो मुनियर पाम ।  
घन्य घटी दिन आन है जी, पूरो मुह मन आश ॥ भवि० ५ ॥

मान दर "नय मार" के जी, आये मुनि महाराज ।  
 शुद्धमान आदार को जी, लेये सयम काज ॥ भवि० ६ ॥  
 भय जीव तव जान के जी, देवे गुरु उपदेश ।  
 समकित मोती उरधर्यो जी, छीप स्वाति जल लेग ॥ भवि० ७ ॥  
 द्रव्य भाव मारग लहेजी, माधु "श्री नय मार" ।  
 माधु सगे माधुता जी, प्रकृत है निर्धार ॥ भवि० ८ ॥  
 भय पहिले समकित लखोजी, गीजे भय "देवलोक" ।  
 पहिले एक पल्योपम जी, 'हरि' सुख पावे अशोक ॥ भवि० ९ ॥

शोदा—

भौषर्मा सुर लोक म, भोगवी सुख अपार ।  
 "दक्षिण" भरते अत्रतयो, श्री नयमार सुधार ॥

ढाल २

अरुणिक मुनिवर चारया गोचरी० (इम तर्ज में)

विनिता नगरीर "चक्री मारत" के, घर मे लियो अवतारजी ।  
 नाम दियो शुभ "परिची" नात ने, उत्सव पूर्वक सार जी ॥  
 देखो २ २ करम तरणीगति, भूलादे निज भान जी दे० ॥ टे० ॥  
 बाल मालमोरे छोड़ युवा भयो, स्ने अनेक विलास जी ।  
 एक दिन मन्दन श्रादि जिनद गयो, पायो बोध विक्राम जी ॥  
 देखो २ २ करम तरणी गति ॥ १ ॥

वैगग रग रे दिक्षा ले सदा, सेवे श्री जिननाथ जी ।  
तीत्र तपस्या रे शरीर सहे नहीं, जाणी छोडे साथ जी ॥

देखो २ रे करम तरणी गति ॥ २ ॥

हो एकाकी रे मन में चितवे, मैं करू नूतन चाल जी ।  
हाथ कमण्डलु सिर छत्री धरे, पग चाखडी गले माल जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ३ ॥

हाथ त्रिदंड रे भगवा वेप मे, रागि हुआ जेण चित्त जी ।  
मुड मुडावे रे चोटी सिर धरे, राखे योज्ञोपवीत्त जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ४ ॥

स्नान करे और जाप जपे सही, -आदि जिनद-त्रिकाल जी ।  
कन्द मूल का रे नित भक्षण करे, करे ममकित समाल जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ५ ॥

प्रभु जी के पीछे रे पीछे रहे सदा, विचरे देश विदेश जी ।  
समवसरन सब सुरपति जब करे, बैठे बहिर प्रदेश जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ६ ॥

आपे कोई रे वन्दन कारणे, दे मचा उपदेश जी ।  
सयम रगे रे रगी भाव से, भेजे प्रभु जी के पास जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ७ ॥

करते पावन अवनीतल प्रभु, आवे नगरी 'चिनीता' जी ।  
भरतादिक सब नरगुरवर मिलि, वदन करे इरु चित्त जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ ८ ॥



वदन करके रे निज वानरु प्रति, घंटे भरत सनूर जी ।  
 वार परछदा रे पैठी दख के, पूछे भूप पहर जी ॥  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ ९ ॥

आप समान रे कोई जीव है, मवमरन मझार जी ॥  
 भाये प्रभु जी रे बहिर है सही, मरिची नाम कुमार जी ।  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ १० ॥

चौथे आरे क होगा अन्त में चौवीमम " श्री वीर जी " ।  
 'सुत्रिय कुट्टे' रे 'सिद्धारथ' घरे, 'त्रिशला' नन्दन धीर जी ॥  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ ११ ॥

श्री मुख वाणी रे 'भरत' सुणी करी, पाया हर्ष अपार जी ।  
 मरिचि निरुट मे रे जावे प्रेम से, बोले बचन उदार जी ।  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ १२ ॥

तू घासुदेव रे पहिलो भरत में, मुक्ताविजये चवीनी ।  
 फिर तू होगा रे जिन चौवीममो, महावीर नामे नकी जी ।  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ १३ ॥

पहिली दूजी रे पदवी को नहीं, नांही त्रिदडी घेप जी ।  
 श्री तीर्थंकर पद को में नमू, सुन श्री जिन उपदेश जी ॥  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ १४ ॥

बन्दन करके रे भरत घरे गयो, सुन कर नाचे मरिची जी ।  
 घन २ मुज को रे घन मुज वश को घन मुह करणी ऊची जी ।  
 देखो २ रे करम तणी गति ॥ १५ ॥

मेरे दादा रे तीर्थ कर हुए, तात हुए मुज चक्री जी ।  
उन दोनों से रे अधिका मैं हुआ, रासुदेन पद चक्री जी ।

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १६ ॥

तीर्थकर की रे पदवी मुझको, होगी विसवा त्रीस जी ।  
तीनों पदवी को मैं भोग के, लूगा मुक्ति जगीश जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १७ ॥

नाच कूद के रे कूलको मद कर्यो, बाध्यो कर्म को बध जी ।  
'हरि' कहें तातें रे होगा देखना, नीच गोत्र सम्बन्ध जी ॥

देखो २ रे करम तणी गति ॥ १८ ॥

दोहा—

बहुत समय के बाद मे, उपजा रोग शरीर ।  
बैयावच के कारणे, बोलावे मुनि धीर ॥ १ ॥  
देस त्रिदडी बेपको, कोई न पूछे मार ।  
उद्वेगी हो कर करे मन मे खूब विचार ॥ २ ॥

ढाल ३

भेखरे उतारी राजा भरथरी० ( इस तर्ज में )

स्वारथ का समार है, म्वाग्थ विन नहीं कोय जी ।  
रोग हुआ मुझ अग मैं, कोई न पूछे आय जी ॥  
पश्चात्ताप करे घणो, कतो हृदय विचार जी ॥ टेर ॥  
अब जो मुझ साता हुवे, तो शिष्य करू दो चार जी ।

शिष्य विना समार में, क्रोध न करे उपचार जी ॥  
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १ ॥

रोग गयो माता हूड, आया कपील कुमार जी ।  
उपदेश ट क भेणियो, समवमग्न महार जी ॥  
पश्चात्ताप कर घणो ॥ २ ॥

ऋषभ जिन्नन्द रन्दन करी, दग्धे ऋद्धि विस्तार जी ।  
धर्म नहीं यह माधु की, तिलसे सुर ऋद्धि मार जी ॥  
पश्चात्ताप कर घणो ॥ ३ ॥

पीला आप कपील रहे, तुमही कहे मुझ धर्म जी ।  
वहाँ तो कुठ भी है नहीं, समार तारक धर्म जी ॥  
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ४ ॥

मन म हप घरी रहे, मरिची सुनो कपील जी ।  
मत्य धरम तुम को रहे, छोहो जगत जजाल जी ॥  
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ५ ॥

वेप धरायो आप को, मन कल्पित कर धर्म जी ।  
कोटा कोटा सागर मित, भय बर्द्धकबांधा धर्म जी ॥  
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ६ ॥

लाग चौराशी पूर्व रा, भोगरी आयुष्य कर्म जी ।  
भव तीजा पूग करे, जावे पाचरें स्वर्ग जी ॥  
पश्चात्ताप कर घणो ॥ ७ ॥

चौधे दश सागर महा सुख भोगी सुर लोक जी ।  
पाचवें कौल्लारु ग्राम में, हुआ बाह्यण कौशिक जी ॥

पश्चात्ताप करे घणो ॥ ८ ॥

श्रायुष अस्ती लास जो, त्रिदण्डी ले भेस जी ।  
छठे भव फिर द्विज हुआ, बहतर पूरन लास जी ॥

पश्चात्ताप करे घणो ॥ ९ ॥

त्रिदण्डी साधु हुवा, धुणा नगरी महार जी ।  
पाके मातमें भव गया, कल्प सुधर्मा सार जी ॥

पश्चात्ताप करे घणो ॥ १० ॥

अग्नि द्योत द्विज आठमें, माठ पूरन लख आय जी ।  
त्रिदण्डी नव मे मही, दूजे देव मे जाय जी ॥

पश्चात्ताप करे घणो ॥ ११ ॥

दशमें भव मन्दिर पुरे, अग्नि भूति द्विज नाम जी ।  
छप्पेन पूरन लास में, त्रिदण्डी भयो नाम जी ॥

पश्चात्ताप करे घणो ॥ १२ ॥

इग्यारम भव सुर भयो, तीजे मनत कुमार जी ।  
च्यव श्वेताम्बीनगरी में, भाग्द्विज द्विज सार जी ॥

पश्चात्ताप करे घणो ॥ १३ ॥

चालीस लास पूरन भलो, चार में त्रिदण्डीनाण जी ।  
पाके चौधे महेंद्र में, तेरम भवगुण राण जी ॥

पश्चात्ताप करे घणो ॥ १४ ॥

राजगृह म द्विज हुआ, धार लाए चोत्रिण जी ।  
 पूर्व आयुत्रिदण्डीयो, चौदवें मर सुजगीश जी ॥  
 पथात्ताप करे घणो ॥ १५ ॥

पनरम व्रद्ध में अयतयो, मोनम विश्व भृति जीव जी ।  
 विधानन्दी पर जमियो, धारणाकृशी से दीव जी ॥  
 पथात्ताप करे घणो ॥ १६ ॥

वीर चरित शुभ भाव सं हरि गावे गुण धाम जी ।  
 सार विचार सुधार के, पायो श्रिय आराम जी ॥  
 पथात्ताप करे घणो ॥ १७ ॥

श्लोक—

पाल काल को छोड क, भयो युवान कुमार ।  
 बाडी में सुर मीगवे, निन प्रति सुर मममार ॥ १ ॥  
 दस्ती गान कुमार मन, उपज्यो द्वेष कराल ।  
 जाय पिना को यो कह, दो बाडी ततकाल ॥ २ ॥  
 शांत कर निज पुत्र को, मोचे भूष उपाय ।  
 विश्व भृति को मेजता, वश कारण सिंह राय ॥ ३ ॥  
 जीत पङ्क लाया दिया, निन चाचे के हाथ ।  
 बाडी में जान लगा, जय कीर्ति के माथ ॥ ४ ॥  
 द्वार पाल तब यो कह, रहते राज कुमार ।  
 नहीं जा सकत आप अब, तब जाने छल सार ॥ ५ ॥

पुन. क्रोध से वह कहे, सुन लेना नर नार ।  
 वश भ्रम में ना करूं, नहीं तो क्या है भार ॥ ६ ॥  
 चूर वृक्ष कवीठ का, दे कर मुष्टि प्रहार ।  
 निज दुश्मन को चूरते, लगे जु इतनी बार ॥ ७ ॥

### ढाल ४

माला काटे रे जाला जीव का० ( इम तर्ज में )

तुम देखो भाई गहन गति रे गतिचार की ॥ टेर ॥

सभूति गुरु पाम मेरे जा कर दिक्षा लीघ ।

तपस्या कर निज काय सुकाई, वर्ष हजार प्रसिद्ध जी ॥

तुम देखो भाई ॥ १ ॥

मिचरन्ता अमनीतलेरे, मयुग पुर में जाय ।

भौरे ज्यों गोचरी फिरते को, पाडे दौडी गाय जी ॥

तुम देखो भाई ॥ २ ॥

विशाख नन्दी भाई चचेरा, हम कर बोले बानी ।

कवीठ फल बल गयो कहा कह, अरे महा अभिमानी जी ॥

तुम देखो भाई ॥ ३ ॥

सुन कर साधु परिणति पलटी, क्रोध हुआ विकराल ।

गाय घुमाई सींग परुड कर, छोड़ दिई समाल जी ॥

तुम देखो भाई ॥ ४ ॥

दया बल अब तप फल हो तो पूरब भर निर्वा ।  
 मारु म तुसरो यो कहत, विश्व भूति अणमार जी ।  
 तुम दसो भाई ॥ ५ ॥

कर निदान अनशन करीर, महा शुक्र म चाप ।  
 सतराह म भर म मुगबिलस, उत्कृष्ट स्थिति पाप जी ।  
 तुम दसो भाई ॥ ६ ॥

पोतन पुर नृप प्रजापति की पुत्री रत्न दुती ।  
 भर अष्टादश म वह जनपा, मत्त सुपन की माधी जी ॥  
 तुम दसो भाई ॥ ७ ॥

त्रिगात्र नन्दी जीरमिह को, मारी वासुदेव ।  
 त्रिपुष्ट नाम हुआ भरत मं, करता सुनर सब जी ॥  
 तुम दसो भाई ॥ ८ ॥

पाप पुष्ट उन्नीमम भर म, सप्तम नर क जाय ।  
 वीसम भर म मीम भयङ्कर, गिह हुआ वन राम जी ॥  
 तुम दसो भाई ॥ ९ ॥

इकीमम भर चौथी नरक से, निरुल फिरं समारा ।  
 षाडसम भर साधारण नर, पुण्य क्रिया ब्रत धारा जी ॥  
 तुम दसो भाई ॥ १० ॥

तेई मम भर राय धनञ्जय, धारिणी कुसे आय ।  
 चौद सुपन सुचित अततरिया, प्रिय मित्र चक्रीराम जी ॥  
 तुम दसो भाई ॥ ११ ॥

पोट्टीलाचारज से दीक्षा, शीक्षा युत ले पाले ।  
 वर्ष कोटि समय आराधी, पाप पुञ्ज को बाले जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ १२ ॥

महाशुक्र मे चौबीसमभत्र, सुर पदनी सुखकारा ।  
 पचसीसम भत्र में फिर होवे, नन्दन राजकुमारा जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ १३ ॥

दीक्षा पोटील सूरि से ले, वीम पदों को ध्यावे ।  
 तीर्थङ्कर पर नाम बधन कर, भात्र दया दिल भावे जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ १४ ॥

लाग वर्ष चारित्र पालते, यावज्जीव उदारा ।  
 माम रामण से करे पारणा, क्षमा सहित हितकारा जी ॥  
 तुम देखो भाई ॥ १५ ॥

वर्ष लाख पचसीस कारे, आयुष अपना भोगी ।  
 'हरि' कहे नित वन्दु नन्दन, महा तपस्वी योगी रे ॥  
 तुम देखो भाई ॥ १६ ॥

दोहा—

प्राणत नामक स्वर्ग में, पुण्योत्तर सुविमान ।  
 छन्नीसम भत्र मे वहा, सुर सुरनाथ समान ॥ १ ॥  
 देव लोक सुख भोगते, करते पुण्य विधान ।  
 जिन यात्रा स्नात्रादि मे, नित्य रहें गुलतान ॥ २ ॥



वीम सागर आयुस्थिती, पूर्ण भई जय मार ।  
 व्यवन दुःख नहीं जानते, तब व्यरते निर्घोर ॥ ३ ॥  
 व्यन कल्याणक के ममय, सुन भयो कल्याण ।  
 पुण्यवान जावे जहाँ प्रकट वहाँ निधान ॥ ४ ॥

### ढाल ५

‘राग—गुणगती गरया पद्धति’

मत्रिया वीर चरित्र पवित्र हृदय में धारनारे ।  
 मीपण भय मागर से कैसे पावे पार ॥  
 इम का वीर चरित मे, खूब किया विस्तार ।  
 आत्म परिणत कर निज कर्म विचार विचारना ॥ १ ॥

साखी—पूर्व गोत्रभद्र करन से, नीच गोत्र कर बन्ध ।  
 सत्तागत उम कर्म से, हुआ उदय सम्बन्ध ॥  
 सत्तावीसम भय ब्राह्मण कुल में, अवतारना र। भवि० १।

साखी—“ब्राह्मण कुण्ड” सुगांव मे “ऋषभ दत्त वग्नाम ।  
 “देवानदा” ब्राह्मणी, तप्त गृहिणी गुणधाम ॥  
 करती चौदसुपनलख, दिव्यगरभ प्रतिपालनारे। भवि० २।

साखी—शक्रसिंहासन धरहर्यो, जाने व्यवन सुरिद्र ।  
 सात आठ पग सामने, जा बन्दे जिन चन्द्र ।  
 शक्रस्तव की सत्रिनय शक्र करे उधारनारे ॥ भवि० ३ ॥

- साखी-पूर्वाभिमुख सिंहासने, चन्दन करके इन्द्र ।  
 बैठ सचिन्त विचारता, पुरुष शलाका वृन्द ॥  
 भिक्षादिक नीच कुलमें, जन्म न लें निर्धारनारे । भवि० ४।
- साखी-हरिण गमेपी देव को, हुकम करे सुरराय ।  
 क्षत्रिय कुण्ड सुगाम में, श्रीसिद्धरथराय ॥  
 त्रिशलादेवी कुक्षि श्रीजिन को सचारनारे । भवि० ५।
- साखी-हरिण गमेपी देव तब, दिव्य गति को धार ।  
 देवानन्दा कूख से, करे प्रभु अपहार ॥  
 दूजा गर्भ हरण कल्याणक शास्त्रा धारनारे । भवि० ६।
- साखी-सिंहादिक चौदह सुपन, देखे परम उदार ।  
 त्रिशला निजपतिसे तदा, मुनती स्वप्नविचार ॥  
 होगा चक्री वा तीर्थकर सुत सुखकारनारे । भवि० ७।
- साखी-बीते नौ महीने उपर, दिन जब साडे सात ।  
 हस्तोत्तर नक्षत्र में, जनमे त्रिभुवन तात ॥  
 तीजा जन्म कल्याणक, तीन भुवन जयकारनारे । भवि० ८।
- साखी-छप्पन दिशा कुमारिया सृति कर्म कर जाय ।  
 सुरपति सुर सह सुरगिरी स्नात्र महोत्सव ठाय ॥  
 सुरपति शका स्वामी करते, दूर निवारनारे ॥ भवि० ९ ॥
- साखी-सिद्धरथ दश दिन करे, उत्सव त्रिभिध प्रकार ।  
 ज्ञाती गोश्री जिमा कहे, वर्द्धमान गुणधार ॥  
 सुत है, वर्द्धमान शुमनाम इसे स्वीकारनारे ॥ भवि० १०।

- साखी-यौवन वय नृप पुत्रिका, परणे भोगे भोग ।  
 अष्टा वीसम वर्ष में, मात पिता सुरलोक ॥  
 होते पूर्ण अभिग्रह, होती दीक्षा धारणारे ॥ भवि० ११ ॥
- साखी-नन्दी वर्द्धन बन्धु के, आग्रह से दो वर्ष ।  
 माधुवत् समार मे, नहीं गोरु नहीं हर्ष ॥  
 करते दान सवत्सर से, दारिद्र्य विदारणारे ॥ भवि० १२ ॥
- साखी-जय नन्दा भदा कहे, लोकान्तिक तब देव ।  
 तीर्थ प्रवर्तन को करो, हे स्वामी स्वयमेव ॥  
 ज्ञाता स्वामी हैं तो मी, उनकी आचारणारे ॥ भवि० १३ ॥
- साखी-नन्दी वर्द्धन इन्द्र सह, करे दीक्षोत्तर मार ।  
 द्रव्य भाव से लोच कर, तब होते अनगार ॥  
 यह चउ ज्ञान तथा कल्याणककी सहचारनारे । भवि० १४ ॥
- साखी-एकाकी योगी हुए, छठ तप के वारी ।  
 बार वर्ष छात्रस्थ्य में, दु ग्य सहें भारी ॥  
 जिनमे शूलपाणि सगम, कटपुतना धारनार । भवि० १५ ॥
- साखी-धाति करम के नाश से, प्रकटा केवल ज्ञान ।  
 त्रिसमय भासी भात्र की, तब जानें भगवान ॥  
 पचम कल्याणकम करते, 'हरि' नित वन्दनारे । भवि० १६ ॥

दोहा—

हस्तोत्तर नक्षत्र में, ये कल्याणक पच ।  
स्वाति में निर्वाण पद, छोड़ें भव परपच ॥

ढाल ६

सिद्ध चक्र पद व दोरे भविका० ( राग आशावरी )

श्रीजिन वीर नमामी रे भविका, श्रीजिन वीर नमामि ।  
केवल ज्ञान दिवाकर स्वामी, श्रीजिन वीर नमामि ॥ टेर ॥  
समवसरण सुर वर रचेरे, जहँ गजे जिन चन्दा ।  
अमृत वाणी पीयत प्राणी, पावत परमानन्दारे ॥ भवि० १ ॥  
शक्ति पडित ब्राह्मण इन्द्र-भुत्यादिक दश एक ।  
गणधर गुणधर होते भारी, पाकर बोध विवेकरे ॥ भवि० २ ॥  
सध चतुर्विध सद्वगुण भाजन, थापन कर सुरा कारा ।  
द्विविध चउविध धर्म प्ररूपे, आराधक भवपारारे ॥ भवि० ३ ॥  
अन्तिम चउमासी प्रभु पावन, पावापुर पधारे ।  
सोल प्रहर तक उपदेशामृत-चपें असडित धारेरे ॥ भवि० ४ ॥  
कर्म विपाकोदय प्रभुजी के, भविजन पुण्य सहाई ।  
कारण योगे कारज प्रकटे, यह अनुमय थिर थाईर ॥ भवि० ५ ॥  
चौदशमें गुणठाणे स्वामी, पुद्गुल बन्ध वियोगी ।  
शैलेशी करणे करी होते, शिर रमणी के भोगी रे ॥ भवि० ६ ॥  
काती अमावस्य स्वाति नक्षत्रे, कल्याणक निर्वाणी ।

मिश्रित भावे उत्सव करते, इन्द्र तथा इन्द्राणी रे ॥ भवि० ७ ॥  
 भावोद्योत जिनेश्वर के निन, श्री अम्मावस काली ।  
 गण राजा विरचन तब जगम, द्रव्योद्योत दिवाली रे । भवि० ८  
 आदिम गौतम गणघर स्वामी, वीर विभु पटधारो ।  
 देव मुखे निर्वाण सुने तब शोच करे अति भारी रे भवि० ९ ॥  
 मोह दशा रजनी क्षय होते, परम महोदय शाली ।  
 केवलनान रपि तब प्रकटयो, प्रकटी अद्भुतलाली रे भवि० १० ॥  
 आय ' हरि ' उत्सव तब रचते, करते जय जय कारी ।  
 गौतम वीर प्रभु नित नमते, सधमे मगलाचारी रे । भवि० ११

### कलश

अति स्पच्छ स्रतरगच्छ मे सवेग रग विराजते ।  
 श्री सद्गुरु सुख मिधु विभु भगवानसागर गाजते ॥  
 तम शिष्य हरि सागर गणी उद्धीम में त्यासी समे ।  
 बेराबले श्रीवीर भव गाते विजय हो सध मे ॥

## वीस स्थानक सक्षिप्त विधि

शुभ मुहूर्त्त में सद्गुरु के पास नदी स्थापन पूर्वक वीम स्थानक तप लेना चाहिये । वीस पदों की वीम ओली होती है । प्रत्येक पद का अष्टम से छठ से चौपिहार उपवास से यावत् आयविल एकासनादि से आराधन होता है । दो मास से छह मास में वीस-वीस यथाशक्ति अष्टम आदि तप पूरे करने होते हैं । वीस वीस माला प्रति पद में गिननी होती है । आचार्य उपाध्याय-दिवर साधु चारित्र गौतम तीर्थ इन सात पदों में पौषध अशुभ करना चाहिये । गुणानुवाद, आरभत्याग, गुरुदेव भक्ति एवं आत्मचिंतन विशेष तथा करना चाहिये । पद गुण के भेद प्रमाण सरूपामे लोगस्त का कायोत्सर्ग एव नमस्कार करने चाहिये । मृतक-जातक सतक-स्त्री धर्म आदि में तप नहीं गिना जाता । उहमाससे उपर ओली नहीं होती ।

श्री अरिहत पद नमस्कार १ ।

- |   |   |
|---|---|
| १ | अशोरुबृक्ष प्रातिहार्य सयुताय श्रीअर्हते नम । |
| २ | पुष्प ष्टि " " "                              |
| ३ | दिव्य घनि " " "                               |
| ४ | चामर युग " " "                                |
| ५ | सिंहासन " " "                                 |

६	भामण्डल	"	"	"
७	दुदुभि	"	"	"
८	छत्रत्रय	"	"	"
९	अपायापगमातिशय सयुताय तिशय	"	"	"
११	वचनातिशय	"	"	"
१२	ज्ञानातिशय	"	"	"

ॐ ह्रीं णमो अरिहताण—माला २०

### श्री सिद्धपद नमस्कार २ ।

१	छह सस्थान रहिताय श्रीसिद्धाय नमः ॥ ६ ॥	(१)
२	पांच वर्ण	" " ५
३	दो गध	" " २
४	पांच रस	" " ७
५	आठ स्पर्श	" " ८
६	तीन वेद	" " ३
		३१

१	मति ज्ञानावरणीय कर्म रहिताय भीसिद्धाय नमः ।	(२)
२	श्रुत	" " १

३	अवधि	"	"	
४	मनः पर्यव	"	"	
५	केवल	"	"	१५।
६	निद्रा दर्शना वरणीय	"	"	
७	निद्र निद्रा	"	"	
८	प्रचला	"	"	
९	प्रचला प्रचला	"	"	
१०	स्त्यानर्द्धि	"	"	
११	चक्षु	"	"	
१२	अचक्षु	"	"	
१३	अवधि	"	"	
१४	केवल	"	"	१९।
१५	साता वेदनीय	"	"	
१६	असाता वेदनीय	"	"	१२।
१७	दर्शन मोहनीय	"	"	
१८	चारित्र मोहनीय	"	"	१२।
१९	नरकायु	"	"	
२०	तिर्यगायु	"	"	
२१	मनुष्यायु	"	"	
२२	देवायु	"	"	१४।
२३	शुभ नाम	"	"	
२४	अशुभ नाम	"	"	१२।



२५ उच्चैः गोत्र	॥	॥	
२६ नीचैः गोत्र	॥	॥	१२१
२७ दानान्तराय	॥	॥	
२८ लाभान्तराय	॥	॥	
२९ भोगान्तराय	॥	॥	
३० उपभोगान्तराय	॥	॥	
३१ वीर्यान्तराय	॥	॥	१५१
			३१

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाण—माला २०

श्रीप्रयत्न पद नमस्कार ३ ।

- १ सर्वत प्राणातिपात विरताय श्री प्रयत्नाय नमः
- २ सर्वतो मृषाराद । ॥ ॥
- ३ सर्वतो अदत्तादान ॥ ॥
- ४ सर्वतो मैथुन । ॥ ॥
- ५ सर्वत परिग्रह ॥ ॥
- ६ देशत प्राणातिपात ॥ ॥
- ७ देशतो मृषाराद । ॥ ॥
- ८ देशतो अदत्तादान । ॥ ॥
- ९ देशतो मैथुन । ॥ ॥
- १० देशत परिग्रह ॥ ॥

११ दिशा परिमाण व्रतयुक्ताय	११	११
१२ मोगोपभोग परिमाण	१२	११
१३ अनर्थदण्ड विरताय	१३	११
१४ सामायिक संहिताय	१४	११
१५ देशावगासिक	१५	११
१६ पोषहोपवास	१६	११
१७ अतिथि सविभाग	१७	११
१८ विधि सूत्रागमाय नमः	१८	११
१९ वर्ण सूत्रागमार्य	१९	११
२० भय सूत्रागमार्य	२०	११
२१ उत्सर्ग सूत्रागमाय	२१	११
२२ अपवाद सूत्रागमाय	२२	११
२३ उभय सूत्रागमाय	२३	११
२४ उद्यम सूत्रागमाय	२४	११
२५ सर्वनय समूहात्मक प्रवचनाय	२५	११
२६ सप्तभगी रचनात्मकाय	२६	११
२७ द्वादशांगी गणिपिटकाय नमः	२७	११

ॐ ह्रीं पचयणस्स—माला

## श्री आचार्यपद नमस्कार ४ ।

१	प्रतिरूप गुण धारकाय श्री आचार्याय नमः ।		
२	तेजस्वि गुण	"	"
३	युगप्रधान गुण	"	"
४	मधुर वाक्य गुण	"	"
५	गम्भीर गुण	"	"
६	धैर्य गुण	"	"
७	उपदेश तत्पराय	"	"
८	अपरिश्रावि गुण	"	"
९	सौम्य गुण	"	"
१०	अभिग्रह धराय	"	"
११	अविकथ गुण	"	"
१२	अचपल गुण	"	"
१३	सयम शील गुण	"	"
१४	प्रशान्त हृदयाय	"	"
१५	क्षमा गुण	"	"
१६	मार्दव गुण	"	"
१७	आर्जव गुण	"	"
१८	निर्लोभगुण	"	"
१९	तपो गुण	"	"
२०	संयम गुण	"	"

२१ सत्यधर्म	॥	॥
२२ शौच गुण	॥	॥
२३ अकिञ्चन	॥	॥
२४ ब्रह्मचर्य	॥	॥
२५ अनित्यभायना भाविताय		॥
२६ अशरण भावना	॥	॥
२७ संसार भावना	॥	॥
२८ एकत्व भावना	॥	॥
२९ अन्यत्व भावना	॥	॥
३० अशुचि भावना	॥	॥
३१ आश्रय भावना	॥	॥
३२ सवर भावना	॥	॥
३३ निर्जरा भावना	॥	॥
३४ लोक स्वरूप भावना	॥	॥
३५ बोधि दुर्लभ भावना	॥	॥
३६ दुर्लभ धर्मसाधक भावना		॥

ॐ ह्रीं णमो आयरियाण—मालो २०

## श्री स्थविर पद नमस्कार ५ ।

- |    |  |    |    |
|----|--|----|----|
| १  | लौकिक स्थविर देशकाय लोकतर स्थविराय नमः । |    |    |
| २  | देश स्थविर                               | ११ | ११ |
| ३  | ग्राम स्थविर                             | ११ | ११ |
| ४  | कुल स्थविर                               | ११ | ११ |
| ५  | लौकिक कुल स्थविर                         | ११ | ११ |
| ६  | लौकिक गुरु स्थविर                        | ११ | ११ |
| ७  | लोकोत्तर श्री सध स्थविराय                | ११ | ११ |
| ८  | लोकोत्तर पर्याय स्थविराय                 | ११ | ११ |
| ९  | लोकोत्तर श्रुत स्थविराय                  | ११ | ११ |
| १० | लोकोत्तर वयः स्थविराय                    | ११ | ११ |

ॐ ह्रीं णमो धेराण --माला २०

## श्री उपाध्यायपद नमस्कार ६ ।

- |   |   |    |    |
|---|---|----|----|
| १ | आचाराग सूत्र पाठकाय श्री उपाध्यायाय नमः |    |    |
| २ | सुयगडाग                                 | ११ | ११ |
| ३ | समनायांग                                | ११ | ११ |
| ४ | ठाणाग                                   | ११ | ११ |
| ५ | भगरती                                   | ११ | ११ |
| ६ | जाताधर्मकथा                             | ११ | ११ |

७	उपासकदशा	११	११
८	अतगडदशा	११	११
९	अनुत्तरोपमाह	११	११
१०	प्रश्नव्याकरण	११	११
११	विपाक	११	११
१२	उववाह उपांग श्रुत		११
१३	रायपसेणी	११	११
१४	जीवाभिगम	११	११
१५	पन्नमणा	११	११
१६	जम्बूद्वीप पन्नति	११	११
१७	चद्रपन्नति	११	११
१८	सूर्यपन्नति	११	११
१९	निरया वलिया	११	११
२०	कप्पिया	११	११
२१	पुष्कचुलिया	११	११
२२	पुष्फिया	११	११
२३	वद्धिदशा	११	११
२४	द्वादशांगी श्रुत	११	११
२५	द्वादशांगी श्रुतार्थव्यापकाय		११

ॐ ह्रीं णमो उवज्जायाण २० माला

## श्री साधुपद नमस्कार ७ ।

- |    |                                      |     |
|----|--------------------------------------|-----|
| १  | पृथ्वीमाय रक्षकेभ्यः सर्वसाधुभ्यो नम |     |
| २  | अप्फाय रक्षकेभ्य                     | " " |
| ३  | तेज काय                              | " " |
| ४  | वाउ काय                              | " " |
| ५  | वनस्पतिमाय                           | " " |
| ६  | जसकाय                                | " " |
| ७  | सर्वत प्राणातिपात विरतेभ्यः          |     |
| ८  | सर्वतो मृषानाद                       | " " |
| ९  | सर्वतो अदत्तादान                     | " " |
| १० | सर्वतो मैथुन                         | " " |
| ११ | सर्वतः परिग्रह                       | " " |
| १२ | सर्वतो रात्रि भोजन                   | " " |
| १३ | कपाय वारकेभ्य                        | " " |
| १४ | श्रोत्रेन्द्रिय विषय                 | " " |
| १५ | चक्षु इन्द्रिय विषय                  | " " |
| १६ | घ्राणेन्द्रिय विषय                   | " " |
| १७ | रसेन्द्रिय विषय                      | " " |
| १८ | स्पर्शेन्द्रिय विषय                  | " " |
| १९ | शीतादि परीपह सहनकारकेभ्य             |     |
| २० | क्षमादि गुणधारकेभ्य                  | " " |

- |                              |   |   |
|------------------------------|---|---|
| २१ भाव विशुद्धेभ्यः,         | ” | ” |
| २२ मनोयोग विशुद्धेभ्यः       |   | ” |
| २३ वचनयोग विशुद्धेभ्यः.      |   | ” |
| २४ काययोग विशुद्धेभ्यः       |   | ” |
| २५ मरणान्त उपमर्गधीरेभ्यः    |   | ” |
| २६ अंगोपांग सकोचनशीलेभ्यः    |   | ” |
| २७ निर्दोष समययोग युक्तेभ्यः |   | ” |

ॐ ह्रीं णमो लोण सव्य साहुण २० माला

### श्री ज्ञानपद नमस्कार ८ ।

- |   |   |
|---|---|
| १ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मति ज्ञानाय नमः । |   |
| २ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह                       | ” |
| ३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह                     | ” |
| ४ श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह                   | ” |
| ५ स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह                      | ” |
| ६ रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह                          | ” |
| ७ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह                        | ” |
| ८ चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रह                       | ” |
| ९ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह                      | ” |
| १० मनोऽर्थावग्रह                                  | ” |
| ११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा                            | ” |



१२	रमनेन्द्रिय ईहा	
१३	घ्राणेन्द्रिय ईहा	”
१४	चक्षुरिन्द्रिय ईहा	”
१५	श्रोत्रेन्द्रिय ईहा	”
१६	मन ईहा	”
१७	स्पर्शनेन्द्रिय अपाय	”
१८	रमनेन्द्रिय अपाय	”
१९	घ्राणेन्द्रिय अपाय	”
२०	चक्षुरिन्द्रिय अपाय	”
२१	श्रोत्रेन्द्रिय अपाय	”
२२	मनोऽपय	”
२३	स्पर्शेन्द्रिय धारणा	”
२४	रमतेन्द्रिय धारणा	”
२५	घ्राणेन्द्रिय धारणा	”
२६	चक्षुरिन्द्रिय धारणा	”
२७	श्रोत्रेन्द्रिय धारणा	”
२८	मनो धारणा	”
२९	अक्षरश्रुतज्ञानाय नम	”
३०	अक्षर श्रुत	
३१	सङ्घि श्रुत	”
३२	असङ्घि श्रुत	”
३३	सम्यक् श्रुत	”
		”

३४	मिथ्या श्रुत ज्ञानाय नमः		
३५	सादि श्रुत	॥ ॥	
३६	अनादि श्रुत	॥ ॥	
३७	सपर्यवसित श्रुत	॥ ॥	
३८	अपर्यवसित श्रुत	॥ ॥	
३९	गमिक श्रुत	॥ ॥	
४०	अगमिक श्रुत	॥ ॥	
४१	अग प्रविष्ट श्रुत	॥ ॥	
४२	अनग प्रविष्ट श्रुत	॥ ॥	१४
४३	अनुगामि अवधि ज्ञानाय नमः ।		
४४	अननुगामि अवधि	॥ ॥	
४५	वर्द्धमान अवधि	॥ ॥	
४६	हीयमान अवधि	॥ ॥	
४७	प्रतिपाति अवधि	॥ ॥	
४८	अप्रतिपाति अवधि	॥ ॥	
४९	ऋजुमति मनः पर्याय ज्ञानाय नमः ।		
५०	विपुलमति मनः पर्याय	॥ ॥	२
५१	लोका लोक प्रकाशक श्रीकेवल ज्ञानाय नमः ।		

ॐ ह्रीं णमो नाणस्त—२० माला

## श्री दर्शनपद नमस्कार ९

- १ परमार्थ सस्तव रूप सम्यग्दर्शनाय नमः ।
- २ परमार्थज्ञातृ सेवन रूप " "
- ३ कुलिंग दर्शन वर्जन रूप " "
- ४ कुदर्शन वर्जन रूप " "
- ५ शुश्रुषा रूप " "
- ६ धर्मानुराग रूप " "
- ७ वैयाघृत्य रूप " "
- ८ श्रीअर्हद् भक्ति विनय रूप " "
- ९ श्री सिद्ध विनय रूप " "
- १० चैत्य विनय रूप " "
- ११ श्रुत विनय रूप " "
- १२ धर्म विनय रूप " "
- १३ साधु विनय रूप " "
- १४ श्री आचार्य विनय रूप " "
- १५ श्री उपाध्याय विनय रूप " "
- १६ प्रवचन विनय रूप " "
- १७ दर्शन विनय रूप " "
- १८ ससारे जिन सारमिति चिंतन रूप
- १९ ससारे जिन मति सारमिति चिंतन रूप
- २० ससारे जिन मतस्थित माध्यादि सारमिति

२१	शका दूषण रहिताय	॥	॥
२२	कांक्षा दूषण रहिताय	॥	॥
२३	विचिकित्सा-दूषण रहिताय	॥	॥
२४	कुदृष्टि प्रशसा दूषण रहिताय	॥	॥
२५	तत्परिचय दूषण रहिताय	॥	॥
२६	प्रवचन प्रभावक रूप	॥	॥
२७	धर्मकथा प्रभावक रूप	॥	॥
२८	वादी प्रभावक रूप	॥	॥
२९	नैमित्तिक प्रभावक रूप	॥	॥
३०	तपस्वी प्रभावक रूप	॥	॥
३१	प्रज्ञप्त्यादि विद्याभूत्प्रभावक रूप		
३२	चूर्णाञ्जनादि सिद्धि प्रभावक रूप		
३३	कवि प्रभाव रूप	॥	॥
३४	जिन शासन कौशल भूषण रूप		
३५	प्रभावना भूषण रूप	॥	॥
३६	तीर्थ सेवा भूषण रूप	॥	॥
३७	धैर्य भूषण रूप	॥	॥
३८	जिन शासन भक्ति भूषण रूप		
३९	उपशम गुण रूप	॥	॥
४०	सवेग गुण रूप	॥	॥
४१	निर्वेद गुण रूप	॥	॥

४२	अनुरूपा गुण रूप	११	
४३	आम्निकता गुण रूप	११	
४४	परतीर्थिकादि वदन वर्जन रूप		११
४५	परतीर्थिकादि नमस्कार वर्जन रूप		११
४६	परतीर्थिकादि आलाप वर्जन रूप		११
४७	परतीर्थिकादि सलाप वर्जन रूप		११
४८	परतीर्थिकादि अग्रनादिदान वर्जन रूप		११
४९	परतीर्थिकादि गन्धपुष्पादिदान वर्जन रूप		११
५०	राजाभियोगाकार युक्ताय	११	
५१	गणाभियोगाकार युक्ताय	११	
५२	बलाभियोगाकार युक्ताय	११	
५३	सुराभियोगाकार युक्ताय	११	
५४	कान्तार धृत्याकार युक्ताय	११	
५५	गुरु निग्रहाकार युक्ताय	११	
५६	सत्यवत्त्व धर्मस्य मूलमिति चिंतन रूप		११
५७	सम्पत्त्व धर्मपुर द्वागमिति चिंतन रूप		११
५८	धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप		११
५९	धमस्याधार मिति चिंतन रूप		११
६०	धर्मस्य भाजन मिति चिंतन रूप		११
६१	धर्मस्य निधि सनिभमिति चिंतन रूप		११
६२	अस्ति जीव इति श्रद्धान रूप		११

६३	सच जीवो नित्य इति श्रद्धान रूप	११
६४	जीवः कर्माणि करोति इति श्रद्धान रूप	११
६५	जीव कृत कर्माणि वेदयतीति श्रद्धान रूप	११
६६	जीवस्यास्ति निर्माणमिति श्रद्धान रूप	११
६७	अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धान रूप	११

ॐ ह्रीं णमो दसणस्स —२० माला

श्री विनयपद नमस्कार १० ।

१	श्री अरिहत आसातना वर्जन रूप विनय गुणाय नमः ।	
२	श्री अरिहत भक्ति प्रवण रूप	११
३	श्री अरिहत बहुमान प्रवण रूप	११
४	श्री अरिहत वचन श्रद्धान रूप	११
५	श्री सिद्ध आसातना वर्जन रूप	११
६	श्री सिद्ध भक्ति प्रवण रूप	११
७	श्री सिद्ध बहुमान रूप	११
८	श्री सिद्ध स्तुति करण तत्पर रूप	११
९	सुविहित चन्द्रादि कुलासातन वर्जन रूप	११
१०	सुविहित चन्द्रादि कुल भक्ति प्रवण रूप	११
११	सुविहित कुल बहुमान रूप	११
१२	सुविहित कुल सस्तुति करण रूप	११

१३	सुविहित कौटिकादि गण भक्ति करण रूप	
१४	सुविहित कौटिकादि गण बहुमान करण रूप	११
१५	सुविहित कौटिकादि गण सस्तुति करण रूप	११
१६	सुविहित गण-अनासातना रूप	११
१७	श्री सद्य आमातना वर्जन रूप	११
१८	श्री सद्य भक्ति करण रूप	११
१९	श्री सद्य बहुमान करण रूप	११
२०	श्री सद्य स्तुति करण रूप	११
२१	आगमोक्त क्रिया अनासातना रूप	११
२२	आगमोक्त क्रिया भक्ति करण रूप	११
२३	शुद्ध क्रिया बहुमान करण रूप	११
२४	शुद्ध क्रिया स्तुति करण रूप	११
२५	जैन धर्म अनासातना रूप	११
२६	जैन धर्म भक्ति करण रूप	११
२७	जैन धर्म बहुमान करण रूप	११
२८	जैन धर्म स्तुति करण रूप	११
२९	ज्ञान गुण अनामातना करण रूप	११
३०	ज्ञान गुण भक्ति करण रूप	११
३१	ज्ञान गुण बहुमान करण रूप	११
३२	ज्ञान गुण स्तुति करण रूप	११
३३	ज्ञानि जन अनामातना रूप	११

३४	ज्ञानि जन भक्ति करण रूप	११
३५	ज्ञानि जन बहुमान करण रूप	११
३६	ज्ञानि जन स्तुति करण रूप	११
३७	आचार्य आसातना वर्जन रूप	११
३८	आचार्य भक्ति करण रूप	११
३९	आचार्य बहुमान करण रूप	११
४०	आचार्य स्तुति करण रूप	११
४१	स्थविर मुनि अनामातना रूप	११
४२	स्थविर मुनि भक्ति करण रूप	११
४३	स्थविर मुनि बहुमान करण रूप	११
४४	स्थविर मुनि स्तुति करण रूप	११
४५	उपाध्याय अनासातन रूप	११
४६	उपाध्याय भक्ति करण रूप	११
४७	उपाध्याय बहुमान करण रूप	११
४८	उपाध्याय स्तुति करण रूप	११
४९	गणावच्छेदक अनासातन रूप	११
५०	गणावच्छेदक भक्ति करण रूप	११
५१	गणावच्छेदक बहुमान करण रूप	११
५२	गणावच्छेदक स्तुति करण रूप	११

ॐ ह्रीं णमो विणय गुणस्स—२० माला





## श्री चारित्र्यपट्ट नमस्कार ११ ।

- १ सर्वतः प्राणातिपात विरमण रूपाय चारित्र्याय नमः ।
- २ सर्वतः मृपावाद विरमण रूपाय                    "                    "
- ३ सर्वतः अदत्तादान विरमण रूपाय                    "                    "
- ४ सर्वतः मैथुन विरमण रूपाय                            "                    "
- ५ सर्वतः परिग्रह विरमण रूपाय                        "                    "
- ६ क्षमा धर्म चारित्र्याय नमः
- ७ आर्जन धर्म चारित्र्याय नमः
- ८ मृदुता धर्म चारित्र्याय नमः
- ९ मुक्ति धर्म    "
- १० तपो धर्म    "
- ११ सयम धर्म    "
- १२ सत्य धर्म    "
- १३ शौच धर्म    "
- १४ अकिंचन धर्म    "
- १५ ब्रह्मचर्य धर्म    "
- १६ पृथ्वीकाय रक्षा सयम                                    "
- १७ अप्फाय रक्षा सयम                                        "
- १८ तेज काय रक्षा सयम                                        "
- १९ वाउ काय रक्षा सयम                                        "
- २० वनस्पती काय रक्षा सयम                                "

२१	वेदन्द्रिय रक्षा समय	११
२२	तेजन्द्रिय रक्षा समय	११
२३	चउरिन्द्रिय रक्षा समय	११
२४	पचिन्द्रिय रक्षा समय	११
२५	अजीव रक्षा समय	११
२६	प्रेक्षा समय	११
२७	अनुप्रेक्षा समय	११
२८	अधिक वस्त्र भक्तादि न्यास रूप	११
२९	प्रमाजेन रूप समय	११
३०	मनः समय	११
३१	वचन समय	११
३२	काया समय	११
३३	श्री आचार्य वेयावच्च रूप	११
३४	श्री उपाध्याय वेयावच्च	११
३५	तपस्वी वेयावच्च	११
३६	लघुशिष्य वेयावच्च	११
३७	ग्लानमाधु वेयावच्च	११
३८	साधु वेयावच्च	११
३९	श्रमणोपासक वेयावच्च	११
४०	सद्य वेयावच्च	११
४१	कुल वेयावच्च	११

४२	गण वेद्यावच्च	११	११
४३	पशुपडगादि सहित वसति वर्जन रूपाय		
४४	स्त्री दास्यादि कथा वर्जन	११	
४५	स्त्री आसन वर्जन	११	
४६	स्त्री अगोपाग निरीक्षण वर्जन	११	
४७	बुद्धतर स्थित स्त्री द्वाव भाव श्रवण वर्जन		
४८	पूर्व समीग चिंतन वर्जन	११	
४९	अति सरम आहार वर्जन	११	
५०	अनि अद्धार वर्जन	११	
५१	जग विभूषा वर्जन	११	
५२	अनशन तपो रूप	११	
५३	ऊनोदरी तपो रूप	११	
५४	ष्टुत्ति संक्षेप तपो रूप	११	
५५	रस त्याग तपो रूप	११	
५६	काय क्लेश तपो रूप	११	
५७	सलेखन तपो रूप	११	
५८	प्रायश्चित्त तपो रूप	११	
५९	विनय तपो रूप	११	
६०	वेद्यावच्च तपो रूप	११	
६१	सज्ज्ञाय तपो रूप	११	
६२	ध्यान तपो रूप	११	

६३ कायोत्सर्ग तपो रूप	११
६४ अनत ज्ञान युक्त	११
६५ अनत दर्शन युक्त	११
६६ अनत गुण रमण रूप	११
६७ क्रोध निग्रह करण रूप	११
६८ मान निग्रह करण रूप	११
६९ माया निग्रह करण रूप	११
७० लोभ निग्रह करण रूप	११

ॐ ह्रीं णमो चारित्तस्स—२० माला

### श्री ब्रह्मचर्यपद नमस्कार १२ ।

- १ मनसा औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्याय नमः ।
- २ मनसा औदारिक विषय अकरावण रूप
- ३ मनसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन रूप
- ४ वचसा औदारिक विषय अकरण
- ५ वचसा औदारिक विषय अकरावण
- ६ वचसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन
- ७ कायेन औदारिक विषय अकरण
- ८ कायेन औदारिक विषय अकरावण
- ९ कायेन औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन

- १० मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप " "
- ११ मनसा वैक्रिय विषय अकरावण रूप " "
- १२ मनसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन " "
- १३ वचसा वैक्रिय विषय अकरण " "
- १४ वचसा वैक्रिय विषय अकरावण " "
- १५ वचसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन " "
- १६ कायेन वैक्रिय विषय अकरण " "
- १७ कायेन वैक्रिय विषय अकरावण " "
- १८ कायेन वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन " "

ॐ हीं णमो बभयधराण—२० माला

श्री क्रियापद नमस्कार १३ ।

- १ कायिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय नम ।
- २ अधिकरणिमा क्रिया " "
- ३ पारितापनिका क्रिया " "
- ४ प्राणाति पाति की क्रिया " "
- ५ आरम्भिका क्रिया " "
- ६ परिग्रह क्रिया " "
- ७ मायाप्रत्ययिका " "
- ८ मिथ्या दर्शन प्रात्ययिका " "

९ अपचक्राणी	११
१० दृष्टि क्रिया	११
११ स्पर्शन क्रिया	११
१२ प्रातित्य की क्रिया	११
१३ सामतोपनिपातनिका	११
१४ नैशस्त्रि की	११
१५ स्वहस्तिकी	११
१६ आणवणी क्रिया	११
१७ विदारणिया क्रिया	११
१८ अनाभोग प्रत्ययिकी	११
१९ अनवरुस प्रत्ययिकी	११
२० आज्ञापन प्रत्ययिकी	११
२१ प्रयोग क्रिया	११
२२ समुदान क्रिया	११
२३ प्रेम क्रिया	११
२४ द्वेष क्रिया	११
२५ इरियावहिया	११

ॐ ह्रीं णमो किरियाण—माला २० ।

## श्रीतपपद—नमस्कार १४

- १ अनशन तपोयुक्ताय नमः ।
- २ ऊनोदर तपोयुक्ताय ”
- ३ वृत्ति सक्षेप तपोयुक्ताय
- ४ रस त्याग ”
- ५ काय क्लेश ”
- ६ सलीनता तपोयुक्ततायनमः
- ७ प्रायश्चित्त ”
- ८ विनय ”
- ९ वैषाढृत्य ”
- १० सज्ज्ञाय ”
- ११ ध्यान ”
- १२ कायोत्सर्ग ”

ॐ ह्रीं णमो तवस्स—२० माला

## श्री गौतमपदाराधन १५ ।

- १ श्रीगौतम गणधराय नमः ।
- २ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ।
- ३ श्रीवायुभूति ” ”

- |    |                       |      |                 |
|----|-----------------------|------|-----------------|
| ४  | श्रीव्यक्तस्वामी      | ॥    | ॥               |
| ५  | श्रीसुधर्मास्वामी     | ॥    | ॥               |
| ६  | श्रीमण्डित स्वामी     | ॥    | ॥               |
| ७  | श्रीमौर्यपुत्र स्वामी | ॥    | ॥               |
| ८  | श्रीअकम्पित स्वामी    | ॥    | ॥               |
| ९  | श्रीअचलभ्राता         | ॥    | ॥               |
| १० | श्रीमेतार्य स्वामी    | ॥    | ॥               |
| ११ | श्रीप्रभास स्वामी     | ॥    | ॥               |
| १२ | चौरीम तीर्थ करोंके    | १४५२ | गणधरेभ्यो नमः । |

ॐ ह्रीं णमो गोयघाण—२० माला



श्रीजिनपद नमस्कार १६ ।

- |   |                              |     |
|---|------------------------------|-----|
| १ | श्रीसीमन्धर जिनेश्वराय नमः   | ।   |
| २ | श्रीयुगमन्धर जिनेश्वराय नमः  | ।   |
| ३ | श्रीबाहु जिनेश्वराय नमः      | ।   |
| ४ | श्रीसुबाहु जिनेश्वराय नमः    | ।   |
| ५ | श्रीमुजात जिनेश्वराय नमः     | ।   |
| ६ | श्रीम्वय प्रभ जिनेश्वराय नमः | ।   |
| ७ | श्रीरूपमानन                  | ॥ ॥ |
| ८ | श्रीअनतरीर्य                 | ॥ ॥ |



९ श्रीसूर प्रभु	"	"
१० श्रीविशाल	"	"
११ श्रीरजधर	"	"
१२ श्रीचन्द्रानन	"	"
१३ श्रीचन्द्रबाहु	"	"
१४ श्रीभुजग स्वामी	"	"
१५ श्रीइश्वर स्वामी	"	"
१६ श्रीनेमि प्रभु	"	"
१७ श्रीवीर सेन प्रभु	"	"
१८ श्रीमहा सेन प्रभु	"	"
१९ श्रीदेवमेन	"	"
२० श्रीअनितवीर्य	"	"

ॐ ह्रीं णमो जिणाण—२० माला



श्री चारित्रपद नमस्कार १७ ।

- १ सर्वतः प्राणातिपात विरमणरूपाय चारित्राय नमः ।
- २ सर्वतः मृषावाद विरमण " " "
- ३ सर्वतः अदत्तादान विरमण " " "
- ४ सर्वतः मैथुन विरमण " " "
- ५ सर्वतः परिग्रह विरमण " " "
- ६ सर्वतः रात्रीभोजन विरमण " " "

७ इर्यासमिति समिताय	११	११
८ भाषा समिति समिताय	११	११
९ एषणा समिति समिताय	११	११
१० आयाणभंडमत्तनिस्त्रेवणासमिति समिताय		११
११ पारिष्ठापनिका समिति	११	११
१२ मनोगुप्ति गुप्ताय	११	११
१३ वचन गुप्ति गुप्ताय	११	११
१४ काय गुप्ति गुप्ताय	११	११
१५ मनो दण्ड विरताय	११	११
१६ वचनदण्ड विरताय	११	११
१७ कायदण्ड विरताय	११	११

ॐ ह्रीं णमो चारित्तधराण—२० माला



श्री ज्ञानपद नमस्कार १८ ।

१ श्री आचारांग सूत्राय नमः	।	
२ श्री स्रयगडांग	११	११
३ श्री ठाणांग	१	११
४ श्री समवायांग	११	११
५ श्री मगवती	११	११
६ श्री ज्ञाताधर्म कथा	११	११
७ श्री उपासकदशा	११	११

८	श्री अन्तगडदशा सूत्रायनमः	”	”
९	श्री अनुत्तरोववाह	”	”
१०	श्री प्रश्न व्याकरण	”	”
११	श्री विपाक	”	”
१२	श्री उववाह	”	”
१३	श्री रायपसेणहय	”	”
१४	श्री जीवा मिगम	”	”
१५	श्री पन्नवणा	”	”
१६	श्री जजूद्वीप मन्त्रती	”	”
१७	श्री चदपन्नती	”	”
१८	श्री सूरपन्नती	”	”
१९	श्री निरया वलिया	”	”
२०	श्री पुष्पिका	”	”
२१	श्री पुष्पचूलिका	”	”
२२	श्री कल्पिका	”	”
२३	श्री वह्निदशा	”	”
२४	श्री चउसरणपयन्ना	”	”
२५	श्री सथारगपयन्ना	”	”
२६	श्री भत्तपयन्ना	”	”
२७	श्री चदाविजिय	”	”
२८	श्री मरणविभत्ति	”	”

२९ श्री गणितिज्ञा	११	११
३० श्री तदुलवेयालिय	११	११
३१ श्री देवेन्द्रस्तव	११	११
३२ श्री आउर पञ्चस्र्खाण	११	११
३३ श्री महापञ्चस्र्खाण	११	११
३४ श्री दशवैकालिक	११	११
३५ श्री उत्तराध्ययन	११	११
३६ श्री आवश्यक मूल	११	११
३७ श्री पिण्ड निर्युक्ति	११	११
३८ श्री व्यवहारच्छेद	११	११
३९ श्री निशीथ	११	११
४० श्री महानिशीथ	११	११
४१ श्री दशाश्रुतस्कध	११	११
४२ श्री जीतकल्प	११	११
४३ श्री पचकल्प	११	११
४४ श्री नदीचूलिका	११	११
४५ श्री अनुयोगद्वार	११	११
४६ स्यादस्तिमगग्ररूपकाय सूत्राय नमः ।		
४७ स्यान्नास्तिमग	११	११
४८ स्यादस्ति नास्ति मग	११	११
४९ स्याद वक्तव्य मंग	११	११

- ८० स्यादस्ति अवक्तव्य भग सूत्रायनम' ॥  
 ८१ स्यान्नास्ति अवक्तव्य भग ॥ ॥  
 ५२ स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्य भग ॥ ॥

ॐ ह्रीं णमो णाणस्स—२० माला

श्री श्रुतज्ञानपद नमस्कार १९ ।

- १ पर्याय श्रुतज्ञानाय नम ।  
 २ पर्याय समास श्रुत ॥  
 ३ अक्षर श्रुत ॥  
 ४ अक्षर समास ॥  
 ५ पदश्रुत ॥  
 ६ पदसमासश्रुत ॥  
 ७ सघात श्रुत ॥  
 ८ सघात समास श्रुत ॥  
 ९ प्रतिपत्ति ॥  
 १० प्रतिपत्ति समास ॥  
 ११ अनुयोग श्रुत ॥  
 १२ अनुयोग समास श्रुत ॥  
 १३ श्रुत ज्ञानाय नम ।  
 १४ श्रुतसमास ज्ञानाय नम ।

१५ बहु श्रुत ज्ञानाय	॥
१६ बहु श्रुत समास	॥
१७ पाहुड श्रुत	॥
१८ पाहुड समास श्रुत	॥
१९ पूर्व श्रुत	॥
२० पूर्व समास श्रुत	॥

ॐ ह्रीं णमो सुयस्स २० माला ।

### श्री तीर्थपद नमस्कार २०

- १ सर्वतः प्रणातिपातविरताय श्रीतीर्थाय नमः ।
- २ सर्वतः मृषावाद विरताय नमः ।
- ३ सर्वतः अदत्तादान ॥
- ४ सर्वतः मैथुन ॥
- ५ सर्वतः परिग्रह ॥
- ६ पृथ्वीकाय रक्षकाय ॥
- ७ अप्काय रक्षकाय ॥
- ८ तेजस्काय रक्षकाय ॥
- ९ वायु फाय रक्षकाय ॥
- १० वनस्पतिकाय रक्षकाय ॥
- ११ श्रसकाय रक्षकाय ॥

१२ क्रोधरहिताय	
१३ मानरहिताय	॥
१४ मायारहिताय	॥
१५ लोभ रहिताय	॥
१६ रागाश निरताय	॥
१७ द्वेषांश विरताय	॥
१८ लज्जागुण युक्ताय	॥
१९ दया गुण युक्ताय	॥
२० माध्यस्थ्य गुण	॥
२१ सौम्य गुण	॥
२२ गुणानुराग गुण	॥
२३ अक्षुद्र गुण	॥
२४ सघ प्रभावना गुण	॥
२५ उपास्यगुण	॥
२६ लोकविरुद्ध वर्जन गुण	॥
२७ अमूर गुण	॥
२८ पाप मिरु गुण	॥
२९ परानचरु विश्वसनीय गुण	॥
३० दाक्षिण्य गुण	॥
३१ अशुभ कथा वर्जन गुण	॥
३२ अनुकूल धार्मिक परिवार युक्ताय	॥
३३ दीर्घ दर्शिंगुण	॥

३४ सत्सगति गुण	॥
३५ वृद्धानुगतगुण	॥
३६ रत्नत्रयी शुद्धाय	॥
३७ परहित कारण गुण	॥
३८ लब्ध लक्ष्य गुण	॥

ॐ ह्रीं णमो तित्थस्स—२० माला







